सूर्या फाउण्डेशन

राष्ट्राय स्वाहा

इदं राष्ट्राय इदं न मम

अर्द्धवार्षिक पत्रिका | अंक-3 | वर्ष-2 | अप्रैल - सितंबर 2024

अनुक्रमणिका

चेयरमैन संदेश–प्रेरणा	1
सम्पादकीय	2
मा. चम्पत राय जी का उद्‌बोधन	3
व्यक्तित्व विकास शिविर	6
आदर्श गाँव योजना	10
डेरी प्रशिक्षण शिविर	18
इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन (INO) गतिविधियाँ	23
सूर्या थिंक टैंक	29
हायर मैनेजमेंट ट्रेनिंग कैम्प (HMTC)	38
स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन (SBO)	40
पीएम श्री सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल, खेरंचा	47
कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर, मध्य प्रदेश	50

प्रेरणा

पद्मश्री जयप्रकाश अग्रवाल
चेयरमैन, सूर्या फाउण्डेशन

साथियों,

किसी राष्ट्र का गौरव जब तक जागृत रहता है तब तक वह अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को अगली पीढ़ी को सिखाता है, संस्कारित करता है। वह पीढ़ी को निरंतर प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र का भविष्य तब ही उज्ज्वल होता है जब वह अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से हर-पल जुड़ा रहता है। भारत के पास तो गर्व करने के लिए अथाह कारण है, समृद्ध इतिहास है, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत है।

पिछले ही माह हमने अपना 78वां स्वाधीनता दिवस मनाया। कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है, और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। हम भारत में हो रहे बड़े बदलावों और विकास कार्यों की दहलीज पर खड़े हैं। यह हर भारतीय के लिए उम्मीदों भरा दौर है, एक ऐसा दौर है जिसमें वे बेहतर जिंदगी और बेहतर देश का सपना देख सकते हैं। लिहाजा, यही वह वक्त है, जब हम भविष्य के भारत का ताना-बाना बुनें।

हमें भारतीय होने पर गर्व है और उन मूल्यों पर भी, जो भारत के साथ जुड़े हैं। एक पुरानी कहावत है कि भारत एक नया देश है, लेकिन एक प्राचीन सभ्यता है और इस सभ्यता ने अपने पूरे इतिहास में जबरदस्त परिवर्तन देखा है। हम सबको इस नए और पुराने के बीच तारतम्य स्थापित करते हुए भारत को सिरमौर बनाना है।

जयप्रकाश

सम्पादकीय

आधुनिक भारत ने उस विचार को झुठला दिया है कि अत्यधिक सामाजिक विविधता और शुरुआती स्तर पर भयंकर ग़रीबी के चलते लोकतांत्रिक प्रशासन और आर्थिक प्रगति साथ-साथ नहीं चल सकते हैं।

'रौशनी आती है जो, तो साये भी जगमगा उठते हैं।' विश्व स्तर पर मची उठा-पटक और व्यवस्था में ख़लल के बीच एक लोकतांत्रिक देश के तौर पर भारत का उभार विश्व व्यवस्था के लिए बड़ी उम्मीद जगाता है।

एक देश के तौर पर भारत के सामने पहाड़ जैसी तमाम चुनौतियाँ खड़ी हैं—मसलन, इसकी तमाम विभिन्नताएँ, इसका औपनिवेशिक इतिहास, और इसकी सामाजिक उठापटक—इसके बावजूद भारत गणराज्य, दुनिया भर में स्वतंत्रता और लोकतंत्र वाले देश की मिसाल बना है। भारत मूल रूप से उद्यमिता वाला देश है, जिसने लोकतांत्रिक व्यवस्था में मौक़े मिलने पर हमेशा ही तरक़्क़ी करने का हुनर दिखाया है।

आज भी भारत की आधी से ज़्यादा कामकाज़ी आबादी खेती के काम में लगी है। ऐसे में भारत को अपने संरचनात्मक ढांचे में तुरंत दूरगामी बदलाव लाने की ज़रूरत है—ये बदलाव पीढ़ियों में होने वाले परिवर्तन लाएँगे—इस मामले में सही फ़ैसला करने से भारत न केवल वास्तविक रूप से समृद्ध देश बनेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर इसके नेतृत्व में भी विश्वास बढ़ेगा।

भारत पहले ही अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर चुका है। इसकी तीन हज़ार साल से भी ज़्यादा पुरानी सभ्यता ने पूरी मानवता पर गहरे सांस्कृतिक प्रभाव डाले हैं। आधुनिक भारत ने उस तर्क को झुठला दिया है कि विशाल सामाजिक विविधता और शुरुआती स्तर पर भयंकर ग़रीबी के चलते लोकतांत्रिक प्रशासन और आर्थिक प्रगति साथ साथ नहीं चल सकते हैं। भारत ने आर्थिक बदलावों को अपनाया है, जो इसे नई ऊंचाइयों तक ले जाएँगे।

सामाजिक क्षेत्रों में काम कर रही अनेक संस्थाएँ सरकार के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम कर रही रही हैं।

सूर्या फाउण्डेशन विगत 30 वर्षों से मानव जीवन को प्रभावित करने वाले अनेक क्षेत्रों में काम कर रहा है। देश के कोने कोने में हज़ारों कार्यकर्ता पूरे मनोयोग से काम कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, युवा प्रशिक्षण, थिंक टैंक्स के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन और विकास के लिए प्रतिबद्ध योजनायें जमीन पर नई इबारतें लिख रहे हैं। ये प्रयास दिखने में छोटे जरूर हैं किन्तु उनके प्रभाव बहुत बड़े और असरकारी हैं।

हजारों गाँवों में पोषण वाटिकाएँ बन रही हैं, चेक डैम्स बन रहे हैं, लाखों की संख्या में वृक्षारोपण हो रहा हैं, हजारों बालकों के व्यक्तित्व को निखारा जा रहा है, योग और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति जागरूकता फैलाई जा रही है। हजारों महिलाओं को उद्यम के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, गौ संवर्धन और प्राकृतिक खेती के लिए किसानों और युवाओं को प्रेरित किया जा रहा है।

ये प्रयास रामायण की गिलहरी के प्रयास की तरह असीम श्रद्धा और आस्था पूर्ण विश्वास से भरे हैं कि हम होंगे कामयाब!

राहुल 'नील'

व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन समारोह में

मा. चंपत राय जी का उद्बोधन

महासचिव, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र, अयोध्या

15 दिन की तपस्या में सम्मिलित होने वाले भाइयों और बहनों, अभिभावकगण आप सबको मेरा प्रणाम। वैसे तो सूर्या फाउण्डेशन के इस शिविर में मैं पहली बार आया हूँ लेकिन ऐसे शिविरों में मैं 17 वर्ष की आयु से कम से कम 40 बार तो रहा ही हूँ। एक महीने के शिविर, 25 दिन के शिविर, 15 दिन के शिविर। आपके समान शिविर में भागीदारी करना, शिक्षक रहना, व्यवस्थाओं को संभालना, शिविर आयोजित करना। ये सब काम प्रकृति ने कराये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में इस प्रकार के शिविर लगाने की परंपरा लगभग 90 साल से तो है ही। मैं आजकल विश्व हिंदू परिषद में हूँ, विश्व हिंदू परिषद में भी हमने इस प्रकार के शिविर लगाने का काम शुरू किया। युवकों के, युवतियों के, गृहस्थ अधिकारियों के, कार्यकर्ताओं के। अब इन शिविरों के क्या लाभ हैं—बालकों ने अपने अनुभवों में बता दिया।

शिविर एक तपस्या है। हम घर में कैसे रहते हैं?

हमारी रुचि के अनुसार साधन रहते हैं, जब चाहते हैं जैसा चाहते हैं भोजन मिल जाता है। जब इच्छा हो सो जाते हैं, इच्छा हो जाग जाते हैं जब मन किया खेलने चले जाते हैं। हमें नहीं मालूम कि अपने घर में अपने सामान की चिंता हम करते हैं कि माता जी करती हैं। लेकिन शिविर में एक दिनचर्या निर्धारित है, आपको नींद आ रही हैं लेकिन दिनचर्या में मैदान पर खेलकूद के लिए जाना है तो जाना है।

आपको नींद नहीं आ रही रात के 10 बज गये हैं सूचना मिलती है कि सो जाओ तो सो जाओ और जब सवेरे नींद आती है तो कहते हैं कि उठो, अपने शरीर को साधना है । इसी प्रकार भोजन, अपने सामान की भी रक्षा खुद करनी, खोया गया क्या, चलते समय सब देख लेना कि कोई सामान छूट तो नहीं रहा जो घर से लाये थे। तो हम जब जाते थे तो डायरी में लिखकर ले जाते थे कि क्या-क्या सामान ले जाते थे, कि क्या-क्या समान ले जा रहे हैं। एक दिन पहले से बैग लगाते थे कि कोई समान छूट तो नहीं गया। तो अपने सामान की स्वयं रक्षा करना। सेना में भी यही सिखाया जाता है।

दूसरी बात है कि यह सामूहिक जीवन भी अपने में एक साधना और तपस्या है, एक कमरे में 15 लोग सो रहे हैं। किसी को खर्राटे आते हैं कुछ को नहीं आते, अब खर्राटे वाले को अलग थोड़े ही करते है। मैदान के कार्यक्रम क्या सिखाते हैं एक आवाज पर, एक सीटी पर शरीर की क्रियाएँ एक साथ करें।

वह मन्त्र बोला गया है ना "संगच्छध्वं" 'कदम से कदम मिलाकर चलना'। यह बड़ा प्राचीन मन्त्र हैं वैदिक ऋषियों का। कदम से कदम मिलाकर चलें। जब कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तब एक दूसरे के विचार भी धीरे धीरे मिलते हैं। फिर अगला वाक्य है 'संवदध्वं' एक जैसा बोलें, अच्छी बात बोलें। 'संवो मनांसि जानताम' हमारे सबके मन भी एक जैसे हो जायेंगे। जब शरीर एक-सा चलता है कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तो एक-दूसरे की बात भी मानते है और अच्छी बातों के प्रति एक जैसा विचार करते हैं, इसी को संगठन कहा गया है।

मिलकर काम करना हो तो यह भाषण से नहीं होता है। हम संगठित रहें, रोज बोलें, रोज बोलें तो शायद परिणाम नहीं आएगा। परिणाम तब आएगा जब इस तरह से रहने की आदत पड़ जाती है।

एक-दूसरे से तालमेल करने की आदत पड़ जाती है। इसका अभ्यास होता है। इस प्रकार के शिविरों में यह अभ्यास ही होता है।

यह जीवन का अभ्यास है, यह शरीर के अंदर जाता है तो खून के अंदर हड्डियों में, मांस में समाना चाहिए। यह बार-बार करने से होता है। भगवान ने सभी को कोई न कोई प्रतिभा दी है। इस प्रकार के आयोजनों के द्वारा यह सतत् प्रकट होने लगती है।

ये जो छोटी-छोटी ईश्वर प्रदत्त बातें हैं, उनको प्रकट करने का उत्साह ऐसे शिविरों से ही प्राप्त होता है। इसलिए यह व्यक्तित्व विकास हमारे ही जीवन के अंदर छिपे हुए हमारे शरीर में छिपे हुए गुणों को बाहर प्रकट करने का एक सुअवसर है।

हमारे निजी जीवन का विकास, हमारा निजी जीवन धीरे-धीरे निखरता है। निजी जीवन निखारने का मतलब अंदर छिपे गुणों को प्रकट करना है। इसमें जो किताब छपी इसमें लिखा है कि पहला काम क्या है इस आयु में, पहला काम है शरीर, बाद में कुछ और, यह विवेकानंद कहते हैं पहले अपने अंदर छुपे हुए गुणों को बाहर प्रकट करो शेष चीजें बाद में।

हमारे हाथ में लाठी भी नहीं है तो भी अपनी आत्मरक्षा, नियुद्ध ! निशस्त्र होकर युद्ध करना। छोटी सी डंडी है हाथ में तो उससे भी अपनी रक्षा कर लेंगे। कहीं ना कहीं मन में कुछ रहता है जिसको भय कहते हैं, इस प्रकार के सामूहिक अभ्यास से वह बाहर निकल जाता है, निर्भयता प्रवेश करती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रारंभ - महाराष्ट्र में नागपुर के युवक ने किया। वह युवक आप ही के समान था। मेडिकल की परीक्षा पास करके अपने घर आ गया है। हिंदुस्तान को अंग्रेजों की दासता से बाहर निकलने की लड़ाई चल रही थी। उनको पता लगा कि नागपुर में बड़ी सभा होने वाली है हम भी सुनेंगे, भाषण में क्या है। नागपुर आते-आते पता लगा कि लोग उल्टे पैर भाग रहे हैं। यह नौजवान जिसका केशव नाम है, किसी को पकड़ा, क्यों भाग रहे हो, हांफ रहा है कोई उत्तर नहीं दे रहा। दूसरे को पकड़ा तीसरे को पकड़ा। पता लगा पुलिस आ गई, किसी और को पकड़ा पता किया कितने लोग थे तो बोला 3 ही लोग थे, हाथ में क्या था तो बोला लाठी थी। पूछा क्या किया तो बोला किया कुछ नहीं बस दूर से आ रहे थे। तो 3 लोग लाठी लेकर सभा स्थल की ओर आ रहे हैं तो यह देखकर देश की आजादी के लिए जिंदाबाद, मुर्दाबाद के नारे लगाने वाली भीड़ भाग गई। यह डॉ केशव हेडगेवार के जीवन की घटना है 1925 से पहली। डॉ. हेडगेवार कहते हैं कि अगर 3-4 नौजवान भी एक सिपाही को पकड़कर बैठ जाते तो सभा चलती रहती लेकिन सब भाग गये।

यह समाज का चित्र है। आपस में एक-दूसरे के प्रति विश्वास नहीं था, भीड़ है।

इस प्रकार के शिविर एक-दूसरे के प्रति विश्वास जगाने का भी काम करते है। इसलिए डॉ. हेडगेवार ने 1925 में आपके समान ही कुछ बच्चों को इकट्ठा करके केवल कबड्डी खिलाई। समाज को एकजुट करना, एक-दूसरे

के प्रति भरोसा पैदा करवाना। भयमुक्त से निर्भयता प्रदान करना। यह ऐसे ही आयोजन से होता है। 1947 के पहले देश के युवकों ने, युवतियों ने कैसे-कैसे कष्ट सहे हैं उसका भी यहाँ एक सुंदर चित्रण हुआ। यहाँ की दिनचर्या केवल भाग-दौड़ की नहीं है तो बीच में कुछ ऐसे विषयों की जानकारी भी देते हैं। समाज के लिए कष्ट सहकर जीवन जीना, समाज की भलाई के लिए काम करना, ऐसे महापुरुषों का जीवन, ऐसी कहानियाँ, नई कहानियाँ तो कृत्रिम हो सकती है तो लोगों का जीवन, शिवाजी का जीवन, गुरुगोविंद सिंह महाराज का जीवन, महाराणा प्रताप के कष्टों का जीवन, के छोटे बालकों का जीवन जिन्होंने वैसा जीवन में किया है ऐसी कथाएँ समाज की, देश की आज क्या आवश्यकता है उस पर चर्चा, आपस में विचारों का आदान-प्रदान तो बहुमुखी प्रतिभाओं का विकास, उनके विकास की प्रक्रिया, उसकी प्रयोगशाला यानी यह शिविर।

पिछले साल आये थे, फिर आएँगे फिर आएँगे, ऐसे ही आने से धीरे-धीरे वह हमारे जीवन में स्थाई भाव धारण करता है। मैं सोच रहा था कि जब मैंने पहले शिविर 1963 में बरेली में किया था, शिविर 30 दिन का था। घर पहुँचने के बाद घर में मन ही नहीं लगता था, शाम को शहर के बाहर खेत की तरफ निकल जाते थे वो दृश्य याद आता था सामुहिक जीवन का। मैं यह भी याद कर रहा हूँ, घर में पूछा क्या खाओगे, जो बन जायेगा माँ, जो दे दोगी। अभी तक कहते थे—यह इच्छा लगती है। अब कहते हो जो मिल जायेगा। ऐसा ढल जाता है। अब यहाँ सर्टिफिकेट देते हैं क्या? बड़ी अच्छी बात है हमने इतनी बार किया हमें तो किसी ने कागज का टुकड़ा भी नहीं दिया तो आप सबके अच्छे भविष्य की, अच्छे जीवन की मंगलकामना प्रभु के चरणों में करता हूँ, आप सबको मेरा प्रणाम।

व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन पर माननीय चंपत राय जी का सम्मान करते हुए सूर्या फाउण्डेशन के वाइस चेयरमैन वेद जी एवं अनंत बिरादार जी

झिंझौली में माननीय चंपत राय जी के साथ सूर्या फाउण्डेशन की टोली

व्यक्तित्व विकास शिविर

विश्व की सबसे बेशकीमती संपदा अगर कहीं है तो वह भारत में है, 66 प्रतिशत युवा आबादी। जिस तेज गति के साथ वैश्विक स्तर पर सभ्यताओं में बदलाव हो रहा है, तकनीकि दिन-प्रतिदिन नये आयामों को छू रही है, अब यह एक स्वर्णिम अवसर है भारत के लिए विश्व सिरमौर बनने का।

युवाओं में नई सोच और नये विचार पैदा करने की सर्वाधिक क्षमता होती है। यहाँ आवश्यकता है बस उन्हें साधने की।

26 वर्ष पहले जब सूर्या फाउण्डेशन के व्यक्तित्व विकास शिविरों का खाका खींचा गया तब पद्मश्री जयप्रकाश अग्रवाल जी के मन में यह विचार दृढ़ हो चुका था कि युवा ही नव राष्ट्रनिर्माण की नींव बनेंगे।

इस नींव के निर्माण में आवश्यक संस्कार, मूल्य, अनुशासन, एकाग्रता, धैर्य और शारीरिक तथा मानसिक रूप से सुदृढ बनाने वाली दिनचर्या और पाठ्यक्रमों से मिलकर शिविरों की रचना हुई। वर्ष दर वर्ष इन शिविरों के आयोजन का क्रम बढ़ता चला गया। लाखों बालक इन शिविरों में लाभ लेने लगे।

अनवरत चले आ रहे युवा विकास के इस क्रम में इस वर्ष ४ युवा व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किये गये।

इन शिविरों में भारत के 14 राज्यों के 1100 बच्चों ने भाग लिया। हर वर्ष उन्नत कार्यक्रम के साथ प्रारम्भ होने वाले ये शिविर शिविरार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक बनते हैं।

इस वर्ष महाराष्ट्र में आर्य चाणक्य विद्याधाम संभाजीनगर से प्रारम्भ हुआ शिविरों का क्रम गुजरात, मध्यप्रदेश और दिल्ली तक चला।

शिविरों में निरोगी काया और शारीरिक सुदृढ़ीकरण के लिए योग, व्यायाम, दौड़ और प्राकृतिक चिकित्सा जैसी गतिविधियों में शिविरार्थी भाग लेते हैं। दिनभर की व्यवस्थित दिनचर्या का पालन और आर्मी ड्रिल तथा पीटी अनुशासन का गुण बढ़ाती है।

इसके साथ ही संभाषण, डिबेट, चर्चा और मैनेजमेंट के विभिन्न सत्रों से शिविरार्थी का व्यक्तित्व निखरता है, इससे उनका आत्मविश्वास प्रबल होता है।

निशानेबाजी, घुड़सवारी, विभिन्न प्रकार के भारतीय खेल, बाजीराव भोजन, अपने काम खुद करना, क्राफ्टिंग, पत्र और कविता लेखन आदि शिविर की दिनचर्या में शामिल रहते हैं।

पिछले व्यक्तित्व विकास शिविरों से चुने गये तथा सूर्या स्कॉलरशिप स्कीम के माध्यम से आये शिविरार्थियों का एक साझा शिविर एडवांस व्यक्तित्व विकास शिविर के नाम से आयोजित हुआ। इस शिविर के 30 शिविरार्थियों का चयन सूर्या की स्कॉलरशिप योजना के तहत किया गया। भविष्य में इन शिविरार्थियों को संस्था में प्रशिक्षक बनने का अवसर भी मिलेगा।

शिविरों के दौरान शिविरार्थियों को पद्मश्री आचार्या सुकामा दीदी, विश्व हिंदू परिषद के श्री चम्पत राय जी, सूर्या ग्रुप के चेयरमैन पद्मश्री जयप्रकाश अग्रवाल जी, इस्कॉन से केशव प्रभु जी जैसे विशिष्ट जनों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आदर्श गाँव योजना

ग्रामीण विकास ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं को बेहतर बनाने की सतत् और व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है। हालाँकि, बढ़ते शहरीकरण और वैश्विक बदलाव ने आज ग्रामीण क्षेत्रों के चरित्र को बदल दिया है। ग्रामीण विकास देश के समग्र विकास के मूल में बना हुआ है। देश की दो-तिहाई से अधिक आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है, और ग्रामीण भारत का एक-तिहाई हिस्सा अभी भी गरीबी रेखा से नीचे है। नतीजन, सरकार के लिए उनके जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण विकास न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली अधिकांश आबादी के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। माना जाता है कि देश में ग्रामीण विकास आज पहले की तुलना में राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में अधिक महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी रणनीति है जिसका उद्देश्य उत्पादकता में वृद्धि, अधिक सामाजिक-आर्थिक समानता और आकांक्षा, तथा आर्थिक और सामाजिक विकास में स्थिरता प्राप्त करना है।

सूर्या फाउण्डेशन की आदर्श गाँव योजना इसी प्रक्रिया और दूरदर्शिता का अभिनव प्रयोग है। **"गाँव के लिए-गाँव के लोग"** के सूत्र के साथ ग्राम विकास के अनेक पहलुओं पर सतत् काम चल रहा है। स्थानीय लोगों, समाज, सरकार, सामाजिक संस्थाओं और व्यवसायिक इकाइयों को साथ लेकर ग्राम विकास की नई परिभाषा गढ़ी जा रही है, छोटे-छोटे सामाजिक बदलाव बड़े परिवर्तन का आधार बन रहे हैं।

सिलाई केंद्र

स्वयं सहायता समूह - प्रशिक्षण

स्वयं सहायता समूह - स्टॉल

महिला सशक्तिकरण

27 अप्रैल 2024, सूर्या रोशनी लिमिटेड काशीपुर प्लांट का परिसर – जब उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जी इस क्षेत्र में सूर्या फाउण्डेशन द्वारा चलाये जा रहे स्वयं सहायता समूह की बहनों से मिले, सूर्या फाउण्डेशन द्वारा किये जा रहे प्रयासों को सुना, जाना और बहनों का हौंसला बढाया। सूर्या लाइटिंग के काशीपुर प्लांट के अधिकारियों ने स्वयं सहायता समूह की बहनों द्वारा निर्मित गणेश जी की मूर्ति मुख्यमंत्री जी को भेंट की। माननीय मुख्यमंत्री को इस क्षेत्र में सूर्या फाउण्डेशन द्वारा चलाये जा रहे अन्य सेवा प्रकल्पों, महिला सशक्तिकरण एवं आदर्श गाँव योजना के बारे में भी जानकारी दी गयी। मुख्यमंत्री यह जानकर अत्यंत प्रसन्न थे कि मातृशक्ति को आगे बढ़ाने के लिए सूर्या फाउण्डेशन काम कर रहा है। सैंकड़ों महिलाएँ आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं। स्वयं को आत्मनिर्भर बना रही हैं, अपने परिवार और समाज को सशक्त बना रही हैं।

महिलों को आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में महिलाओं द्वारा गाँव के कार्यक्रमों, मेलों व आस-पास के कारखानों, त्योहारों पर स्टॉल लगाये जाते हैं। जिसमें साबुन, वॉशिंग पॉउडर, गोनाइल, डिशवॉश, पापड़, अचार, नमकीन आदि सामग्रियों के प्रचार-प्रसार के साथ साथ बिक्री की जाती है। गाँव के लोग घर की बनी शुद्ध वस्तुओं की खूब खरीदारी करते हैं। यह स्टॉल सबके आकर्षण का केन्द्र तो रहता ही है साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की ओर ले जाने में सहायक है।

काशीपुर में स्वयं सहायता समूह की बहनों द्वारा निर्मित गणेश प्रतिमा उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री जी को भेंट की

इसी क्रम में सूर्या फाउण्डेशन की आदर्श गाँव योजना के द्वारा सिंघवारी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में सिंघवारी-मध्य प्रदेश सिलाई कौशल केंद्र पर 15 महिलाओं को टी-शर्ट बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण महिलाओं को रोजगार का एक बड़ा माध्यम बन रहा है। जहाँ आज टी-शर्ट, पैंट्स एवं महिलाओं के कपड़े बनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रही हैं, वहीं महिलाओं के रोजगार के लिए सूर्या फाउण्डेशन उनके आर्थिक सुधार में बड़ा सहयोगी बना है। भविष्य में महिलाओं को सिलाई के अच्छे अवसर उपलब्ध होंगे। केन्द्र के माध्यम से बनने वाले टी-शर्ट का उपयोग सूर्या रोशनी एवं सूर्या फाउण्डेशन एवं अन्य संस्थानों में भी किया जाएगा। जिससे बड़ी मात्रा में महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

सिलाई केंद्र पर बनी टी-शर्ट भेंट करती बहनें

देश के अनेक हिस्सों में महिलाओं के बीच सूर्या फाउण्डेशन की आदर्श गाँव योजना के अनेक कार्यक्रम चल रहे हैं, स्व-सहायता समूहों के गठन, प्रशिक्षण, आर्थिक मार्गदर्शन, बाज़ार की उपलब्धता जैसे विषय लगातार इन समूहों तक पहुंचाए जाते हैं। पिछले दिनों मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के ग्राम थूनाकला में ग्राम संगठन के सदस्यों, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं, सूर्या संस्कार केन्द्र, यूथ क्लब एवं सिलाई केन्द्र के शिक्षकों के साथ बैठक कर गाँव के समग्र विकास की चर्चा की गयी। जिसमें सूर्या फाउण्डेशन के वाइस चेयरमैन वेद जी एवं सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के सलाहकार श्री निशांत जी उपस्थित रहे। गाँव के लोग अपने स्तर पर गाँव में बदलाव और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने को तैयार दिखे।

इसी प्रकार उत्तराखंड के उधमसिंह नगर जिले के गाँव गढ़ीनेगी में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का 5 दिवसीय महिला स्वावलंबन प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। उद्घाटन में ग्राम प्रधान सचिन बाटला, संजय जी (ट्रेनर), रेखा तिवारी जी (क्लस्टर कोषाध्यक्ष) सहित कुल 25 महिला शिविरार्थी उपस्थित रहीं। इस 5 दिवसीय शिविर के दौरान Cleaning Product बनाने की विधि सिखाई गई जिसमें सर्फ, हैंडवॉश, डिशवॉश, फिनायल, बाथरूम क्लीनर, फर्स क्लीनर, टी-पाल इत्यादि वस्तुओं का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण ले रही सभी महिलाओं को प्रशिक्षण सर्टिफिकेट भी दिए गए।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के काशी क्षेत्र के नकाइन गाँव में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा नकाईन गाँव में वाशिंग पाउडर बनाया गया। वाशिंग पाउडर को बनाकर गाँव में बिक्री के साथ-साथ अन्य गाँवों में भी बिक्री के लिए प्रयास किया जा रहा है। जिससे महिलाएँ आत्मनिर्भर और सशक्त बनकर अपने परिवार को आर्थिक रूप से मदद भी कर रही हैं।

सम्पूर्ण भारत में हमारे ये प्रकल्प अपने प्रभाव छोड़ रहे हैं। दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश, हिन्दूपुर के गुडमपल्ली गाँव में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने स्टॉल लगाकर विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों से संबंधित चिप्स और रागी पापड़, लड्डू चिक्की, मक्का, हाथ से बनी फूलों की मालाएँ आदि बेचीं। इसमें महिलाओं को काफी लाभ हुआ।

हमारा मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समूह में छोटी-छोटी बचत करना, छोटी-मोटी जरूरतों की पूर्ति हेतु समूह में ही न्यूनतम दर पर लेन-देन हेतु सक्षम बनाना, महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण करना है। जो सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सके।

सामुदायिक भवन का सौंदर्यीकरण : हिंदूपुर (आंध्र प्रदेश)

आंध्र प्रदेश के हिंदूपुर क्षेत्र के गोल्लापुरम गाँव में सूर्या फाउण्डेशन के द्वारा सामुदायिक भवन का सौंदर्यीकरण किया। इस कार्य में सूर्या रोशनी की स्थानीय इकाई ने भरपूर सहयोग दिया। इस कार्य में शौचालयों का निर्माण, बिजली की सुविधा, पानी की सुविधा और बरसाती पानी अंदर ना घुसे इस प्रकार के निर्माण कार्य हुये। उद्घाटन कार्यक्रम में ग्राम सरपंच एन देवराजू, सूर्या कम्पनी के एच.आर. विभाग शिव प्रसाद, पूर्व जेड.पी.टी.सी. के.एल. आदिनारायण, वेलुगु सी.सी. आदिनारायण आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति शामिल हुए।

भवन सौंदर्यकरण

शौचालय निर्माण

रक्तदान शिविर

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना एवं सूर्या रोशनी लिमिटेड मालनपुर के संयुक्त प्रयास से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में सूर्या फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओ एवं सूर्या रोशनी के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, सूर्या रोशनी महाप्रबंधक मुकुल चतुर्वेदी ने कहा—युवाओं को अधिक से अधिक रक्तदान करना चाहिए, जिससे आपातकालीन समय लोगों को बचाया जा सके एवं उनके परिवार को खुशहाली दे सकें। प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए जिससे अनेकों बीमारियाँ दूर होती हैं इससे शरीर भी स्वस्थ रहता है। इस शिविर में 300 से अधिक लोगों ने रक्तदान किया।

विश्व योग दिवस

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अन्तर्गत इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2024) पर 'स्वयं एवं समाज के लिए योग' के सिद्धांत पर देशभर के 18 राज्यों के 264 गाँवों में 12055 लोगों को योगाभ्यास कराया गया। शिविर में योग साधकों को दैनिक जीवन में स्वस्थ्य रहने के लिए विभिन्न यौगिक क्रियाओं, आसन,

प्राणायाम, सूर्यनमस्कार एवं ध्यान का सामूहिक अभ्यास करवाकर योग से होने वाले लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'समाज के लिए योग' के सिद्धांत पर आधारित रही। जिसके तहत योग अभ्यास साधकों एवं आमजन को नियमित योग करवाया गया। नियमित योगाभ्यास से श्वास-प्रश्वास प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद मिलती है, जिससे सामान्य स्वास्थ्य में सुधार होता है, योग के अभ्यास से तनाव को कम करने में मदद मिलती है, जो रोगों और मानसिक समस्याओं को दूर करने में सहायक होती है। साथ ही सभी साधकों को योग को दैनिक जीवन में उतारने का संकल्प करवाया गया।

बच्चों ने चित्रकला के माध्यम से दिया जल संरक्षण का संदेश

जल है तो कल है, ये कहावत सुनने के बावजूद जल बेवजह बर्बाद किया जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल-संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। हम हमेशा से सुनते आये हैं जल ही जीवन है। इसी को ध्यान में रखते हुये सूर्या संस्कार केन्द्र के द्वारा बच्चे और समाज को जागरुक करने के लिये जल संरक्षण विषय पर चित्र कला प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें संस्कार केंद्र के भैया बहनों द्वारा जल को कैसे बचायें, इस विषय पर चित्र बनाये गये। साथ ही इन बातों को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया गया।

जल संरक्षण, करनपुर (उत्तराखण्ड)

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत उत्तराखण्ड क्षेत्र के ग्राम करनपुर में कार्य चलता है। जिसमें राजकीय पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित है। केन्द्र के प्रभारी श्रीमान डॉ. योगेश शर्मा जी ने आग्रह किया कि हमारे पशु चिकित्सा केन्द्र और परिसर का पानी व्यर्थ जाता है उसकी कुछ व्यवस्था हो जाए। सूर्या फाउण्डेशन के सहयोग से परिसर में जल संरक्षण के अंतर्गत एक सोख्ता गड्ढे का निर्माण किया गया। अब छत और परिसर का पानी गड्ढे के अन्दर जाता है और जल का संरक्षण होता है। इस गड्ढे की लम्बाई 13 फीट और चौडाई 6 फीट व है। पशु चिकित्सा प्रभारी डॉ. योगेश शर्मा जी ने सूर्या फाउण्डेशन द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा की ओर धन्यवाद किया।

फायर सेफ्टी जागरूकता कैम्प

आज के समय में गाँव के सभी परिवारों में गैस सिलेंडर उपलब्ध हैं। गाँव की कुछ महिलाओं में अच्छी शिक्षा व जागरूकता के अभाव में भी गैस सिलेंडर से आग लगने की कई घटनाएँ सामने आयी हैं। इसी उद्देश्य को लेकर ग्राम तिलोरी (मालनपुर) में फायर सेफ्टी शिविर का आयोजन किया गया। इससे लोगों को आग की घटनाओं से निपटने में सहायता मिलेगी। पुलिस फायर स्टेशन मालनपुर से आये राज नारायण शर्मा जी ने बताया कि घरों में शॉर्ट-सर्किट से आग लगने की घटना होती हैं इससे बचने के लिए हमेशा अच्छी क्वालिटी वाले बिजली उपकरण का उपयोग करना चाहिए। खाना बनाते समय गैस चूल्हे के उपयोग के समय रखने वाली सावधानियों के बारे में भी बताया गया। सिलेंडर में आग लगने की स्थिति में क्या-क्या उपाय करना चाहिए। इसके लिए सभी के सामने प्रयोग करने भी दिखाया गया। कार्यक्रम में गाँव की 100 महिलाओं सहित ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

नेत्र जाँच व उपचार शिविर

सूर्या साधना स्थली झिंझौली में सूर्या फाउण्डेशन तथा एम्स, दिल्ली की टीम के संयुक्त तत्वावधान में नेत्र जाँच व उपचार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 280 महिलाओं व पुरुषों ने आँखों की निःशुल्क जाँच करवाकर दवा प्राप्त की। इसमें 120 महिला व पुरुषों के चश्मे बनवाकर उन्हें दिए गए। जाँच के दौरान मोतियाबिंद, आँखों की गंभीर बीमारियों से पीड़ित मरीजों को 7 अगस्त को एम्स दिल्ली के डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क ऑपरेशन करके उचित उपचार किया गया। इस नेत्र चिकित्सा शिविर के दौरान एम्स के सीनियर डॉक्टर अमित भारद्वाज, डॉ. आंचल व उनके साथ 13 डाक्टर्स की टीम व संस्था की टीम ने मिलकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

AIIMS टीम को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए
ब्रिगेडियर डी. सी. पंत, सीनियर वाइस चेयरमैन, सूर्या फाउण्डेशन

झिंझौली में बालकों का विशेष व्यक्तित्व विकास शिविर : 2024

इस वर्ष अप्रैल और मई माह में ग्रामीण व्यक्तित्व विकास शिविरों का आयोजन देशभर के 18 राज्यों के 256 गाँवों में किया गया था। इन शिविरों में देशभर के 7680 भैया बहनों ने भाग लिया। आदर्श गाँव योजना से जुड़े प्रत्येक गाँव से 2-2 भैया बहनों का चयन कर सूर्या साधना स्थली झिंझौली में 15 दिवसीय एडवांस ग्रामीण व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में देशभर के 8 राज्यों से 184 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में शिविरार्थियों ने कराटे, प्राकृतिक चिकित्सा, ध्यान, घुड़सवारी, निशानेबाजी, क्राफ्टिंग और योग के साथ-साथ लीडरशिप, भाषण कला आदि गतिविधियों में भाग लिया। हमारा लक्ष्य है—सशक्त युवा, सशक्त भारत!

शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रियाँक कानूनगो जी (चेयरपर्सन राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग, दिल्ली) उपस्थित रहे।

बच्चों द्वारा क्राफ्टिंग

आंध्र प्रदेश-हिंदूपुर

हर घर पोषण वाटिका अभियान

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 10 राज्यों के 70 कार्ययुक्त गाँवों में 3000 परिवारों में पोषण वाटिका तैयार करने का लक्ष्य लिया गया है। जिसमें वर्तमान समय में सभी परिवारों को सब्जियों के बीज वितरण किया जा रहा है।

सब्जियों के उत्पादन में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का ज्यादा प्रयोग होने के कारण लोगों को रासायनिक सब्जियों का सेवन करना पड़ता है। रासायनिक सब्जियों के नियमित सेवन से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। परिणामस्वरुप लोगों को ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, शुगर, मोटापा, कैंसर आदि गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है इन्ही गंभीर समस्या को ध्यान में रखते हुए संस्था ने देशभर में जैविक तरीके से सब्जी उत्पादन के लिए पोषण वाटिका तैयार करवाने का लक्ष्य लिया है।

गुजरात - पोषण वाटिका के लिए बीज वितरण

घरों में तैयार होने वाली पोषण वाटिका अच्छे स्वास्थ्य का एक उत्तम माध्यम है जिसमें जैविक सब्जियों का उत्पादन किया जाता है और घरों में अच्छी गुणवत्ता वाली रसायनमुक्त सब्जी का उपयोग किया जाता है इससे परिवारों के सदस्यों में स्वास्थ्य सुधार हो रहा है। इस योजना के अंतर्गत कम आय वाले लोग जो सब्जी खरीदने में सक्षम नहीं है उनको भी सीधा लाभ मिल रहा है अपने घर पर ही वाटिका बनाकर सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं।

3000 परिवारों के 15000 लोगों को इसका लाभ मिलेगा। संस्था इस अभियान को पिछले चार वर्षों से लगातार चला रही है जिसमें राष्ट्रीय बीज अनुसंधान संस्थान दिल्ली द्वारा प्राप्त लौकी, भिंडी, तोरई, पालक, चौलाई, बैगन, टमाटर, खीरा धनिया, मिर्च, कद्दू आदि की अच्छी गुणवत्ता वाले बीच परिवारों में निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

बीज वितरण कार्यक्रम में आधुनिक तरीके से की जाने वाली उत्पादन की विधि का प्रशिक्षण के साथ-साथ बीजों का संरक्षण अधिक से अधिक हो इसकी जानकारी भी दी जा रही है। देशभर के10 राज्यों में 70 गाँव में 3000 परिवारों में पोषण वाटिका बनाई जायेगी। यह लक्ष्य लेकर काम चल रहा है।

डेरी प्रशिक्षण शिविर

भारत विश्व के दूग्ध उत्पादन में अग्रणी हैं। लगभग 8 करोड़ परिवार डेरी उद्योग से जुड़े है। भारत प्रतिवर्ष गेहूँ व चावल से अधिक रुपये का दूध का उत्पादन करता हैं।

यदि प्रति पशु दूध उत्पादन की बात करें तो भारत अभी भी विश्व के कई देशों से बहुत पीछे हैं। जिसका प्रमुख कारण हैं, पशुओं का वैज्ञानिक विधि द्वारा पालन नहीं होना ।

सूर्या फाउण्डेशन कई वर्षों से पशु पालकों व किसानों के लिये डेरी प्रशिक्षण का आयोजन कर रहा है। इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है भारतीय नस्ल के गौवंश को बढ़ावा देते हुए पशुपालकों को ऐसी वैज्ञानिक विधि, उन्नत तकनीक और पशुपालन प्रबंधन से परिचित कराना, जिसके माध्यम से वे अपने क्षेत्र में सफल डेरी उद्यमी बन सकें तथा पशुओं की नस्ल सुधार कर अपनी आय बढ़ा सकें।

इस प्रशिक्षण में देश के प्रमुख पशु व डेरी संस्थान जैसे-NDRI-करनाल, CIRC-मेरठ, पशु प्रजनन केन्द्र– राय बरेली, लुवास-हिसार आदि के वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्रशिक्षण का प्रमुख अंग है। इसके अलावा प्रशिक्षणार्थियों को राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल व दिल्ली के आस-पास की गौशालाओं का भ्रमण भी शामिल है। इस प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व विकास

के लिये योगासन, प्राणायाम, खेल व विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी नियमित कार्यक्रम का हिस्सा रहे। पूरे शिविर में पशु नस्ल सुधार, आहार प्रबंधन, रोग प्रबंधन, दुग्ध प्रसंस्करण एवं अपशिष्ट प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया।

प्रतिवर्ष की भांति वर्ष 2024 में पशुपालन के विभिन्न सरकारी संस्थान एवं प्रगतिशील किसानों/पशुपालकों के मार्गदर्शन में डेरी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सूर्या फाउण्डेशन द्वारा आयोजित यह छठवां शिविर था जिसमें 16 राज्यों के 98 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। ये सभी शिविरार्थी डेरी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं या कार्य करना चाहते हैं। ऐसे समय उन्हें एक उचित प्रशिक्षण-वैज्ञानिकों और सफल उद्यमियों के माध्यम से मिलता है, जिसकी वो अपेक्षा करते हैं।

अप्रैल के इस शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में पूज्य सुधांशु महाराज जी एवं Zebu Cattle Association में भारत को सदस्य बनाने वाले श्री मदन मोहन जी की विशेष उपस्थिति रही। शिविर के समापन अवसर पर डॉ. प्रवीण मालिक, पूर्व आयुक्त- पशुपालन विभाग एवं चेयरमैन एग्रीनोवेत एवं ब्रिगेडियर डी. सी. पंत, सीनियर वाइस चेयरमैन, सूर्या फाउण्डेशन उपस्थित रहे।

मल्टी लेयर कृषि प्रणाली प्रशिक्षण

कृषि क्षेत्र में घटती जमीन को ध्यान में रखते हुए परंपरागत फसलों से हटकर सब्जियों, फल एवं दलहन को बढ़ावा देने के लिए कम जमीन में ज्यादा उत्पादन करने की पद्धति को मल्टीलेयर के नाम से जाना जाता है। इस पद्धति का आविष्कार श्री आकाश चौरसिया ने की। इस पद्धति के विस्तार के लिए उत्तराखण्ड के उधमसिंह नगर के ग्राम बसई का मझरा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें आस-पास के 10 गाँवो से 50 किसानों ने भाग लिया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि पद्धति के बौद्धिक तथा प्रायोगिक सत्र भी हुये। इसमें किसानों को मल्टीलेयर कृषि प्रणाली के लिए स्ट्रक्चर तैयार करना, पोषण करने के लिए खाद तैयार करना, अच्छे उत्पादन के लिए बीज शोधन का कार्य, कीड़ों से बचाने के लिए प्राकृतिक कीट नियंत्रक बनाने का प्रशिक्षण दिया गया

कमलेश जाटव, ग्राम-टूडीला, भिण्ड

पहले मैं अपनी जमीन पर परंपरागत फसलें लगाता था। सूर्या फाउण्डेशन द्वारा तीन दिवसीय मल्टी लेअर फार्मिंग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसका प्रशिक्षण प्राप्त कर लगभग 200 sq.ft. एरिया में बांस का स्ट्रक्चर तैयार किया जिसमें फाउण्डेशन ने मेरी सहायता की। मैंने अदरक, हल्दी, धनिया, मेथी, करेला, खीरा, तोरई, लौकी, टमाटर, पपीता आदि सब्जियाँ और फल उगाए। इतनी जमीन में जहाँ मुझे परंपरागत फसल से जितनी आमदनी होती उससे 5 गुना ज्यादा मुनाफा मुझे इस पद्धति से 6 महीने में हो गया। इस तरीके की खेती करना एक वरदान की तरह है। इस सहयोग के लिए सूर्या फाउण्डेशन का विशेष धन्यवाद।

प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण

भूमि सुधार एवं आत्मनिर्भर कृषि के लिए प्राकृतिक खेती एक वरदान है। प्राकृतिक कृषि के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के लिए सूर्या फाउण्डेशन विगत अनेक वर्षों से कार्यरत है।

इसी कड़ी में हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के झिंझौली ग्राम को ग्राम विकास केन्द्र बनाकर, उसके आसपास के 20 गाँवों में प्राकृतिक खेती का कार्य भी शुरू किया गया है। किसान इससे सस्ती, लाभप्रद व विषमुक्त खेती की ओर बढ़ रहे है।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, जिला सोनीपत एवं सूर्या फाउण्डेशन द्वारा जिला सोनीपत में प्राकृतिक कृषि का रकबा बढ़ाने एवं विषमुक्त अन्न की ओर बढ़ने के लिए संयुक्त रूप से प्राकृतिक कृषि में रुचि रखने वाले किसानों को चिन्हित कर इस पायलट प्रोजेक्ट को तीन वर्ष के लिये शुरु किया गया है। इनका प्राकृतिक कृषि का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर मई 2024 सूर्या साधना स्थली, झिंझोली (सोनीपत), हरियाणा में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से विशेषज्ञों द्वारा प्राकृतिक खेती के अनेक प्रयोग जैसे जीवामृत, घनजीवामृत आदि की प्रैक्टिकल क्लास हुई। जैविक प्रमाणीकरण (Organic Certification) के बारे में भी किसानों का मार्गदर्शन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सोनीपत जिले के राई, खरखौदा, गन्नौर और सोनीपत ब्लॉक के 100 किसानों ने भाग लिया।

इन सभी 100 किसानों को प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण, प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में विशेषज्ञों द्वारा 25-25 के बैच में दिया जायेगा। भविष्य में इन किसानों को अन्य राज्यों में प्राकृतिक खेती में किसान क्या-क्या प्रयोग कर रहे है,यह दिखाने के लिये अन्य राज्यों का भ्रमण का भी कार्यक्रम निश्चित किया गया है।

बीज वितरण कार्यक्रम

उन्नत बीज-उत्तम खेती का आधार है, इसके अंतर्गत जिले व ब्लॉक स्तर पर किसान गोष्ठीयों के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली द्वारा गुणवत्ता युक्त धान, गेंहू एवं सब्जी के बीजों का निःशुल्क वितरण किया जाता है। बीज वितरण के साथ पैदावार बढ़ाने हेतु आवश्यक उपाय रोग एवं कीट प्रबंधन आदि की जानकारी भी कार्यकम में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी जाती है।

सूर्या फाउण्डेशन पिछले कई वर्षों से के किसानों की उन्नयन के लिये कार्यरत है इसके अंतर्गत प्रतिवर्ष लाखों रुपए के उन्नत बीज किसान परिवारों को वितरण किए जाते है जिससे परिवारों को पोषण की कमी न हो। इसे पोषण वाटिका अभियान नाम दिया जाता है।

मई 2024 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (Indian Agriculture Research Institute),नई दिल्ली के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन द्वारा अनुसूचित जाति के परिवारों के लिए निःशुल्क बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन उत्तर प्रदेश के फफूंदा (जिला-मेरठ), उत्तराखंड के काशीपुर (जिला-ऊधम सिंह नगर) तथा हरियाणा के झिंझोली (जिला-सोनीपत) में किया गया। अनुसूचित जाति के 1400 परिवारों धान व सब्जियों के उन्नत किस्म के बीज वितरित किये गये। जिसमें धान की उन्नत नस्ल के बीज जैसे पी बी 1847, पी बी 1121, पी बी 1509 के साथ साथ सब्जियों के बीज जिसमें लौकी, तोरी, करेला, पालक, खीरा आदि के बीज शामिल थे। इस कार्यक्रम में IARI,नई दिल्ली के वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल प्रबंधन, उवर्रक प्रबंधन के बारे में विस्तार से बताया।

INO गतिविधियाँ

स्वास्थ्य संस्कृति के महत्वपूर्ण विषयों में से एक विषय है। भारत में सभी समुदायों की संस्कृति की अपनी अवधारणा है तथा सभी अवधारणाएँ स्वास्थ्य से किसी न किसी रूप में संबंधित है। पिछले कुछ दशकों से प्राकृतिक चिकित्सा की जागरूकता व स्वीकार्यता प्रबल हुई है। स्वास्थ्य प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है तथा प्रत्येक मनुष्य का यह प्रयास रहता है कि अपने स्वास्थ्य को मौलिक रूप से बनाए रखें व आरोग्य रहें। इसके फलस्वरूप ही जीवन के गुणात्मक व सकारात्मक सुधार संभव है। जीवन में स्वास्थ्य प्राप्ति अनिवार्य कारक है तथा इसका लाभ सभी को प्राप्त हो, ऐसा हमारा उद्देश्य होना चाहिए। इस दिशा में INO द्वारा किए जा रहे प्रयास फलदायक व सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के साथ सहयोग व समन्वय के द्वारा योग व प्राकृतिक चिकित्सा को घर-घर तक पहुँचाने का प्रयास जारी है। भविष्य में इसके और भी फलदायक परिणाम सामने आएँगे, इसी उद्देश्य के साथ INO योग व प्राकृतिक चिकित्सा को जन-जन में प्रोत्साहित कर रहा है। वर्तमान में INO के सदस्य व पदाधिकारी देश-विदेश में सक्रिय हैं। उन्हीं के माध्यम से योग व प्राकृतिक चिकित्सा से अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। नीचे कुछ कार्यक्रमों का विवरण उल्लेखित किया जा रहा है।

INO द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

सूर्या फाउण्डेशन-इंटरनेशनल नेचुरोपैथी आर्गेनाइजेशन (INO) प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग के प्रचार-प्रसार व इसके ज्ञान व लाभ को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन करता है। इस वर्ष भी आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY), दिल्ली विकास प्राधिकरण, (DDA) के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन-INO द्वारा 21 जून 2024 को पश्चिम विहार स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स, नई दिल्ली में दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया, इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उद्देश्य (Theme) **"स्वयं व समाज के लिए योग"** (Yoga for Self and Society) निर्धारित किया गया। इस योग दिवस समारोह में 1250 से अधिक योग साधकों ने भाग लिया। समारोह में योग एव मानव सेवा संस्थान के पदाधिकारियों ने आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटाकॉल के अनुसार योगाभ्यास कराया। साथ ही आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के भाषण को प्रसारित किया गया। इसके अतिरिक्त कर्तव्य पथ (इंडिया गेट के पास) नई दिल्ली में आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा आयोजित समारोह में INO के 500 से अधिक पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं व सक्रिय सदस्यों ने अधिकारिक रूप से भाग लिया। इस योग समारोह में कुल मिलाकर 5000 से अधिक योग साधकों ने योगाभ्यास किया। इसके अतिरिक्त INO के पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं, आदर्श ग्राम योजना के शिक्षकों व सूर्या फाउण्डेशन PrCB के योग शिक्षकों द्वारा 500 स्थानों पर योग के विशेष कार्यक्रम व 5000 स्थानों पर सामान्य कार्यक्रम आयोजित किये। कुल मिलाकर विशेष व सामान्य योग कार्यक्रमों में 25 लाख से अधिक योग साधकों ने योगाभ्यास किया।

योग महोत्सव बोधगया, बिहार

यह कार्यक्रम मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY) तथा सूर्या फाउण्डेशन व INO बिहार के सहयोग से बोधगया, बिहार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन बोधगया के भिक्षु बड़ा बोधी त्रेता धम्मा तथा वैद्य (डॉ.) काशीनाथ समगंडी, निदेशक MDNIY तथा अन्य उपस्थित विशिष्ठ अतिथियों ने किया। इस योग महोत्सव में 4000 से अधिक उपस्थित योग साधकों को वैद्य (डॉ.) काशीनाथ समगंडी ने आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटोकॉल का योगाभ्यास कराया। योग महोत्सव में INO के 2000 सदस्यों ने भाग लिया।

योग महोत्सव पटना, बिहार

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY) के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन व INO बिहार द्वारा पटना, बिहार में योग महोत्सव का आयोजन किया गया। इस योग महोत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री रामेश्वर सिंह, पूर्व मुख्य सचिव, बिहार सरकार तथा अन्य उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने किया। इस योग महोत्सव में 500 से अधिक योग साधकों ने भाग लिया तथा श्री कृष्ण मुरारी योगाचार्य, पतंजलि ने योगासनों का प्रस्तुतीकरण किया तथा डॉ. पकज कुमार, महासचिव INO बिहार ने आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटोकॉल का योगाभ्यास कराया।

योग महोत्सव भालकी, बीदर, कर्नाटक

यह योग कार्यक्रम मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन- INO व हीरेमठ संस्थान, भालकी (बीदर) द्वारा चनबसवेश्वर आश्रम के प्रांगण, भालकी में आयोजित किया गया। इस योग महोत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में पंचमशाली जगतगुरु पीठ के जगतगुरु श्री श्री वचनानंद स्वामी जी ने किया। हीरेमठ संस्थान के प्रमुख पूज्य डॉ. बसवालिंगा पट्टादेवरु एवं पूज्य गुरुबसवा पट्टादेवरु उपस्थित हुए। यह कार्यक्रम श्री गुरुनाथ राजगीरे, सयोजक INO बीदर तथा श्री ईश्वर रूमा के कठोर परिश्रम व अथक प्रयासों से ही सफल हो सका। पतंजलि योगपीठ, कर्नाटक के प्रभारी योगाचार्य भंवरलाल आर्य जी ने उपस्थित 2000 योग साधकों को आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुसार योगाभ्यास कराया। पूज्य श्री गुरुबसवा पटटादेवरु ने भालकी (बीदर) में योग महोत्सव का आयोजन करने हेतु मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के साथ-साथ सूर्या फाउण्डेशन INO का हृदय से आभार प्रकट किया।

बांग्लादेश (चटगाँव) में योग कैंप का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष्य में योग के विभिन्न आयामों के प्रचार-प्रसार, उसके ज्ञान व लाभ, आरोग्य व विश्व शांति का संदेश देने हेतु INO दिल्ली एनसीआर, गुरुग्राम की अध्यक्षा योगाचार्य वीना घोराई के नेतृत्व में 3 मई 2024 को बांग्लादेश के चटगाँव शहर के रामकृष्ण मिशन प्रांगण में एक दिवसीय योग कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप मे स्वामी शक्तिनाथ महाराज, रामकृष्ण मिशन, चटगाँव ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा इस योग कैंप में 120 से अधिक स्थानीय योग साधक उपस्थित हुए। योग साधक श्री कल्याणमय सरकार, वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत) बांग्लादेश सरकार द्वारा सभी व्यवस्था की गई।

यहां उल्लेखनीय बात यह रही कि योगाचार्य वीना घोराई जी ने विदेश में स्वयं के वित्तीय संसाधनों से INO का प्रतिनिधित्व किया व योग के लाभ-ज्ञान तथा विभिन्न आयामों का प्रचार-प्रसार करके आरोग्य व विश्व शान्ति का संदेश दे कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उद्देश्य की पूर्ति की।

ओडिशा में योग दिवस का आयोजन

यह कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष्य में तथा महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की 66वीं जयंती के अवसर पर INO मयूरभंज, ओड़िसा द्वारा एपेक्स वन सुरक्षा समिति बेंतनटी और इको फ्रेंड्स महुलिया के

संयुक्त उद्यम और सिविल सोसायटी बेतनटि, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के शिमिलीपाल के सहयोग से इस योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस योग कार्यक्रम का उद्घाटन राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक और शिक्षक दर्पण के सम्पादक सच्चिदानंद मोहंती तथा प्रेस एसोसिएशन के अध्यक्ष अरुण कुमार उत्ता के द्वारा किया गया। इस योग कार्यक्रम में लगभग 200 छात्र-छात्राओं, शिक्षकों तथा अन्य लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री रामचन्द्र विश्वविद्यालय बारिपदा के योग और प्राकृतिक चिकित्सा ममीना महंत, रश्मिरेखा महंत एवं बीके यज्ञसेनी एवं बीके सुषमा ने विद्यार्थियों को योग शिक्षा प्रदान की तथा योगाभ्यास करवाया। कार्यक्रम का संचालन इको फ्रेंड्स के अध्यक्ष शिक्षक डॉ. रमाकांत महंत ने किया।

मॉरीशस में योग कार्यक्रम का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष्य में INO मॉरीशस की कोऑर्डिनेटर डॉ रंजीत इंदिरा देवी (प्रीति) द्वारा सतेश्वर प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केंद्र, मॉरीशस

में योग कार्यक्रम एवं वार्ता का आयोजन किया गया। इस योग कार्यक्रम व वार्ता का मुख्य उद्देश्य मॉरीशस के लोगों को योग का जनजागरण कराना, योग के सिद्धांतों को समझाना, उसकी तकनीक व लाभ के बारे में भाग लेने वालों को अवगत कराना था। इस कार्यक्रम में लगभग 500 स्थानीय योग साधकों ने भाग लिया। डॉ. रंजीत इंदिरा देवी (प्रीति) द्वारा वार्ता के माध्यम से लोगों को योग के प्रति प्रेरित करना व योग के साथ जोड़ना है। वार्ता में योग का परिचय, योगासन व उनके लाभ, प्राणायाम तथा तनाव से मुक्ति के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई। आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुसार योगासनों का अभ्यास करवाया गया। योग कार्यक्रम व वार्ता का आयोजन सफल रहा।

इंग्लैंड में योग कार्यक्रम का आयोजन

INO इंग्लैंड की कॉर्डिनेटर डॉ. हेमाली सिंह ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष्य में ट्राफलगर स्क्वॉयर, लंदन-इंग्लैंड में सामूहिक योग का अभ्यास करवाया। इस सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में 700 से अधिक योग साधकों व योग प्रेमियों, INO के साथ अन्य संस्थाओं तथा बॉलीवुड के स्टार राहुल रॉय व अन्य भारतीय कलाकारों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

आयुष मंत्री के सम्मान में

अभिनंदन समारोह

सूर्या फाउण्डेशन व इंटरनेशनल नेचुरोपैथी आर्गेनाइजेशन (INO) द्वारा दिनांक 1 अगस्त 2024 को कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में केन्द्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रतापराव जाधव का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। समारोह में 200 से अधिक योग प्राकृतिक चिकित्सा जगत के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त माननीय श्री भोला सिंह जी व श्री राजू बिष्ट जी दोनों सांसद, श्री वेद जी, वॉइस चेयरमैन सूर्या फाउण्डेशन, डॉ. डी. एन. शर्मा व डॉ. आर. एस. डबास, दोनों राष्ट्रीय उपाध्यक्ष INO, श्री विजय राज शिन्दे, पूर्व विद्यायक, बुलठाना, योगाचार्य युधिष्ठिर पॉल, पतंजलि योग समिति के श्री पवन शर्मा, योग मानव सेवा संस्थान से श्री विनोद मित्तल, श्री विनोद शर्मा, डॉ. नवदीप जोशी, नवयोग संस्था, डॉ. अमित नागपाल निगम पार्षद, आचार्य विक्रमादित्य, आचार्य शीशपाल जी, श्री नन्द किशोर अग्रवाल, अध्यक्ष, बालाजी निरोगधाम वैलनेस नेचर क्योर सेंटर, दिल्ली तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा की अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित हुये।

प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए सांसद डॉ. भोला सिंह एवं श्री राजू बिष्ट ने बताया कि आदरणीय पद्मश्री जयप्रकाश जी पिछले तीन दशकों से प्राकृतिक चिकित्सा योग के समग्र विकास हेतु श्रेष्ठ व सराहनीय योगदान दे रहे है। हम भी संसद में प्राकृतिक चिकित्सा के विकास हेतु आवाज बुलन्द करेगें।

अभिनंदन समारोह के अध्यक्ष व INO के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनंत बिरादार ने आयुष मंत्रालय व नेशनल आयुष मिशन (NAM) द्वारा पिछले 8 वर्षों में नेचुरोपैथी के लिए किये गये रचनात्मक कार्यों हेतु आयुष मंत्री व आयुष सचिव का आभार प्रकट किया। साथ ही नेचुरोपैथी में अनेक वर्षों से प्रैक्टिस कर रहे नेचुरोपैथी चिकित्सकों का रजिस्ट्रेशन, नेचुरोपैथी रजिस्ट्रेशन बोर्ड (NRB) के माध्यम से शीघ्र करने का निवेदन किया। साथ ही डॉ. बिरादार ने बताया कि INO आयुष मंत्रालय के सहयोग से, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार हेतु अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, प्राकृतिक चिकित्सा दिवस, सामूहिक सूर्य नमस्कार, योग उत्सव, कौन बनेगा स्वास्थ्य रक्षक (KBSR) प्रतियोगिता आदि अभियान पद्मश्री जयप्रकाश जी के मार्गदर्शन में 32 राज्यो में कर रहा है। प्राकृतिक चिकित्सा में अग्रसर अपने श्रेष्ठ कार्यों के कारण इंटरनेशनल नेचुरोपैथी आर्गेनाइजेशन विश्व में सबसे बड़ा प्राकृतिक चिकित्सा संगठन बना है।

इस अवसर पर डॉ. अनंत बिरादार ने प्राकृतिक चिकित्सा को लेकर निम्नलिखित प्रस्ताव रखे :-

01 11 जुलाई 2019 को राष्ट्रीय योग प्राकृतिक चिकित्सा संवर्धन व विकास बोर्ड की बैठक में प्राकृतिक चिकित्सकों (BNYS / Self Educated / Diploma Holder) के रजिस्ट्रेशन पर लिए गये निर्णय का पालन करते हुये रजिस्ट्रेशन किया जाय। यह कार्य नेचुरोपैथी रजिस्ट्रेशन बोर्ड (NRB) के माध्यम से यथाशीघ्र प्रारम्भ करें।

02 प्राकृतिक चिकित्सालय आरम्भ करने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा अनुदान (Grant-in-aid) को पुनः आरम्भ किया जाय।

03 प्राकृतिक चिकित्सा के समग्र विकास हेतु अलग से योग नेचुरोपैथी आयोग का गठन किया जाए।

04 प्राकृतिक चिकित्सा के विकास के लिए आयुष मंत्रालय में योग नेचुरोपैथी सलाहकार को नियुक्त किया जाए।

05 आयुष मंत्रालय द्वारा पूणे, महाराष्ट्र में बनाये गये प्राकृतिक चिकित्सालय को प्राकृतिक चिकित्सा विश्वविद्यालय की मान्यता दी जाए।

06 योग सर्टिफिकेशन बोर्ड (YCB), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत प्रमाणीकरण प्राप्त कर चुके योग वांलटियर, योग शिक्षक आदि को रोजगार के अवसर के लिए सरकार दिशा-निर्देश जारी करे।

इस अवसर पर अपने उदबोधन में श्री प्रतापराव जाधव, माननीय केन्द्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने सूर्या फाउण्डेशन एवं INO का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि INO के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनंत बिरादार जी ने योग नेचुरोपैथी डॉक्टरों के, नेचुरोपैथी रजिस्ट्रेशन बोर्ड (NRB) के माध्यम से, रजिस्ट्रेशन के लिए तथा नेचुरोपैथी का हॉस्पिटल खोलने हेतु अनुदान (Grant- in-aid) को पुनः आरम्भ करने के लिए जो मांग रखी है मैं इनके लिए आप सभी को आश्वासन देता हूँ कि आयुष मंत्रालय में नेचुरोपैथी से संबंधित सभी मागों को पूरा करने हेतु सकारात्मक प्रयास करूगा।

इस अवसर पर बालाजी निरोगधाम वैलनेस नेचर क्योर सेंटर को प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार व विकास हेतु सूर्या फाउण्डेशन एवं INO द्वारा अवॉर्ड ऑफ ऐक्सीलेन्स (Award of Excellence) दे कर सम्मानित किया गया। इस अवॉर्ड को संस्था के अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल ने प्राप्त किया।

SURYA THINK TANK

ROAD MAP FOR INDIA FOR THE NEXT 5-YEAR PERIOD ALONG WITH 100 DAY ACTION PLAN : VIKSIT BHARAT 2047

"Today the goal of the country is Viksit Bharat, Sashakt Bharat! We cannot stop until this dream of a developed India is fulfilled".

– PM Shri Narendra Modi

BACKGROUND

Prime Minister Shri Narendra Modi recently issued instructions to all Ministries to ready a Roadmap for India for next 5-year period as a part of 'Viksit Bharat @2047' initiative along with a 100-day Action plan for the new Govt after elections. Surya Foundation domain experts deliberated on the Road map and 100 Day action plan and arrived at the recommendations, enumerated in the succeeding paras for the consideration of the Govt. Where the recommendations are to be processed on priority, their inclusion in 100-Day Action Plan has been indicated by (100-DAP).

ACCELERATING ECONOMIC GROWTH

Progressively Increase the Tax - GDP Ratio. The time has come to increase income tax rates for High-Net-Worth Individuals. As per an Oxfam report, top 3% of the wealthy families of India own 50% of its wealth. If considered necessary, some tax rebates may be given for investments in long-term green/development bonds. (100-DAP for consideration in new Budget July 2024)

Interstate Fiscal Management Council (on the lines of the consensual GST model). Create an Interstate Fiscal Management Council to monitor Fiscal Deficits, address inflationary pressures and ensure effective/efficient utilization of funds on development projects. The council should also monitor progress in human development indices and encourage cooperative competitive federalism. Govt should announce austerity measures in revenue expenditures to send the right

signals down the line to avoid waste. An exercise must be undertaken to review Govt Building/Project Designs, to reduce pressure on Natural Resources and commuting time by habitat planning.

Building Human Capital at the Bottom of the Pyramid. Implement recommendations of New Education Policy (NEP-2020) pertaining to early childhood schooling, starting from the age of three, with fortified breakfast and meals provided to the young children in schools with Centre and States sharing the cost for this. Periodic medical check-ups of such students would ensure early detection of health deficiencies and enable timely interventions.

Corporates should be encouraged to participate in Public-Private Partnership (PPP) for setting up early childhood schools, incurring related expenditure and avail tax rebates as approved by the govt. Skill development of school drop outs to accredited levels and focussing on youth will bring rich demographic dividends/ transformational changes. Connected expenditure by Industry may qualify for tax rebates. (100-DAP with Budget July 2024 provision)

Learning outcomes in schools and enrolment ratio will need intimate monitoring, considering present deficiencies. NEP-2020 should be fully implemented in next 5 years.

Foreign Direct Investment (FDI). Attracting FDI vigorously is vital as private Capital expenditure (Capex) is not forthcoming despite reduction in corporate tax rates/ incentives for new industries. Coastal Economic Zones may be planned on the Western Coast for Petrochemicals and Eastern Coast for Mega steel plants with ship breaking yards, Green hydrogen production facilities with offshore windmill installations for renewable power may be included, with FDI coming from oil rich Gulf Countries, Japan, South Korea etc. India must strive to enter the list of the top 10 countries in Ease of Doing Business (EoDB), Global Competitive Index, Innovative index etc. The present trend of falling FDI inflows requires deeper examination. Studies indicate that termination of some bilateral treaties, that gave protection to FDI, like permitting arbitration in 3rd party countries, etc could be one of the reasons. (100-DAP)

Need for Reprioritising Capital Projects. With the completion of National Highway Projects/ Expressways, Bharat Mala and Railway Dedicated Freight Corridor projects, a scenario of surplus transportation may emerge, especially on the Freight side. Focus may now be accorded to rural arterial road networks to open up unserved rural areas. As regards the decision to increase share of Rail Transport in the Freight mix, vis a via roads from 18 to 45% (Budget 2019), a higher toll may be levied on heavy vehicles covering long distances by road. Railways would also need to change their operating philosophy and enable dispersal of smaller block rakes at terminals. Allocation for Production Linked Incentive (PLI) schemes especially for labour intensive manufacturing sectors may be increased, considering their contribution to employment generation and reduction of imports. (100-DAP)

Privatization. Hastening Privatization of Public Sector Undertaking (PSUs) in

non-strategic areas be progressed on priority. Consolidation of the PSU Banks is another priority area. Support to PSUs for better performance may be increased. It is heartening to find that of late market capitalization of PSUs is showing an upward trend.

ENVIRONMENT AND SUSTAINABILITY

Water Security. Against India's potential for water storage of 700 Billion Cubic Metres (BCM), storage capacity built so far is around 330 BCM. Another 120 BCM storage capacity is in different stages of planning. Additional storage (big/medium/ small storage dams) at the rate of 10 BCM annually should be planned now onwards, focussing on connected hydro - electric potential also. Allocation for pumped storage plants may be increased in July 2024 budget. (100-DAP)

Food Security (Agriculture). Usher in a second Green Revolution in the Eastern part of the country, where abundant water can boost rice, sugarcane and ethanol production and in previously overlooked rainfed areas to increase millet, oilseed, pulses, and cotton output thereby reducing imports. Due to rice cultivation, Punjab faces serious groundwater depletion. A crop diversification program encouraging less water-intensive crops along with incentives is recommended. Similar initiatives are required for Tamil Nadu, Karnataka and Maharashtra to move away from sugarcane cultivation. (100-DAP, impact will be transformational)

Climate Change. Due to climate change, with agricultural land at risk from floods and droughts, enhancing yield and

productivity is crucial. Developing climate-resistant crop varieties is essential. The government should initiate pilot projects in various agro-climatic zones, focusing on innovative Farmer Producer Organisations (FPO)/ Cooperative models with many small-scale farmers, to explore crop diversification, hybrid crops with risk coverage for income support. Given the global demand for wheat and potential yield decreases from rising temperatures, expanding wheat cultivation in cooler regions is advisable.

Energy Security (with special focus on Bioenergy Development). Energy security is important in the context of globally depleting fossil resources. Investment in this area including on afforestation will help employment in rural/ tribal areas. Biomass development with connected water availability if taken up as national priority would have a transformational impact. In case of fossil fuels while dependence on coal should continue, planning should be to increase provision of gas supplies, especially in Southern and Western region far away from coal fields. Gas, with lower emissions should be utilized for steel production in smaller plants in Gujarat, enhancing efficiency and reducing emissions.

Reducing Industrial Emission. While efforts are on to take up hydrogen production through the electrolysis route with renewable power, the steel PSUs and Private sector are yet to formulate prototype/scaling of models for hydrogen steel reduction. This needs to be expedited. The plans for increasing capacity of Alagh ship breaking plant from 3 to 9 Metric Ton (MT) Steel scrap annually must be implemented on priority. Using natural gas for Steel reduction will reduce carbon emission; Use of hydrogen will enable production of green steel economically for export in the above case.

Carbon Capture Storage & Utilization (CCS&U) Technology. CCS&U technology would need to be introduced in all thermal plants on high priority. Tuticorin alkalis, in Chennai are taking carbon dioxide from thermal power plants to manufacture soda ash. Govt needs to set up a consortium consisting of Department of Science and Technology, Council of Scientific & Industrial Research (CSIR) labs National Thermal Power Corporation (NTPC) and Coal India to progress the issue. NTPC is working on a prototype plant for production of Methanol (clean fuel) using carbon dioxide captured from flue gases from thermal power generation in its Vindhyachal Plant. This needs to be replicated in all thermal plants in the country.

Solar Cell Manufacture. Establishing Solar Cell manufacturing on a global scale (to be competitive) are needed along with PLI initiatives for connected power, electronics manufacture to reduce cost of solar power.

Reducing Oil/Gas Imports. The Talcher prototype coal-based fertilizer plant will need to be commissioned early and more coal-based fertilizer plants will have to be planned, as China has done. Pilot projects for the production of Hydrogen from Coal may be launched quickly.

ENHANCING EMPLOYMENT GENERATION

PLI Schemes : PLI schemes may be announced expeditiously for small sectors like Kitchenware, Glassware, Appliances and small tools to revive these sick sectors, affected by cheap Chinese imports. The S.P. Mukherjee Rural and Urban mission (year 2015 with outlay of Rs 30,000 crores), plans to provide modern townships at the centre of village clusters with Industrial/Service parks, Hospitals and Higher education facilities be implemented on priority to spread industries/service sectors in rural areas. (100-DAP for provision of funds in new budget July 2024)

Surplus Agricultural Labour. It is estimated that around 10-12 crores labour, surplus in Agriculture, would be required to be shifted to Manufacturing/Service sectors. This labour could conveniently commute from villages to these new townships for work. China coined a slogan “Leave Agriculture but Stay in Villages” when it observed slum development around its new economic zones. Special PLI schemes, for manufacturing/service sectors to be set up in the new townships, should be launched to boost employment. (100-DAP for provision of funds in new budget July 2024).

Planning for E-Shram Portal for Gig Workers by the Govt. News reports indicate planning of E-Shram portal by the Govt for registering and collecting the data of Gig workers in India for eventual introduction of social security schemes for them. This is a welcome transformative initiative by the Govt. The portal will also give data for skill gaps in country for taking remedial measures. Increasing women in workforce should be an important objective. (100-DAP for provision of funds in new budget July 2024).

INNOVATION, SCIENCE & TECHNOLOGY

The present support to innovation and startups (financial/ technology incubators, etc) may be further extended to emerging technology areas. Science, Technology, Engineering and Maths (STEM) education should receive special focus in School and University curriculums. Bright talent needs to be identified for higher courses with scholarships. Funds for deputing Indian scientists and technologists for foreign universities/ research centres may be increased for frontier technology areas. Department of Science & Technology (DST)'s VAJRA (Visiting Advanced Joint Research) Faculty Scheme for funding induction of NRI scientists, technologists, Engineers in emerging Technology areas should be pursued rigorously.

Reorienting the R&D Setup in India. The large resources with CSIR labs, DST, Universities, etc., should be redeployed for urgent national R&D requirements. Periodic peer review of R&D institutions by eminent scientist's panels, associating foreign/NRI scientists may be undertaken.

Participating in Bright Global Startups. A consortium of PSUs associating CSIR labs/ DST may be created to spot bright global startups for investment in them.

GOOD GOVERNANCE & DEVELOPMENT

In the 1992 report entitled "Governance and Development", the World Bank defined Good Governance as "how power is exercised in the management of a country's economic and social resources for development". Good Governance is associated with Participatory Approach, Consensus-building, Accountability/ Transparency, Rapid response, Efficiency and effectiveness, Corruption-free Administration, Political Stability, Regulatory Quality, etc. There is respect for Human Rights. NITI Ayog could assist in selecting suitable focus parameters, both for Centre and States, and evolve associated performance measurement indices.

Prime Minister's Awards for Excellence in Public Administration (amended 2014/2021). This award recognizes the performance of District Collectors in Priority Programs, Innovations, and Aspirational Districts and towards the economic development of the District. The objective is to encourage Constructive Competition, Innovation, Replication and Institutionalisation of Best Practices. The emphasis is not just on Quantitative achievements but also on the good processes behind. The scheme has been recently modified to include contribution

by Central Ministries in specified initiatives.

Recommendations. The Government may consider appointment of a Governance Committee of select ministers to bring out recommendations on the theme 'Less Govt More Governance' in 100-DAP. Government may also consider appointment of a Parliamentary committee for review of recommendations on new enactments.

SOCIAL PROGRESS

Social Progress Index (SPI) for States and Districts is compiled by Institute for Competitiveness and Social Progress Imperative (SPI) under the guidance of Economic Advisory Council-Prime Minister. It is a comprehensive tool that can serve as a holistic measure of a country's social progress at the national and sub-national levels. The index assesses states and districts based on 12 components across three critical dimensions of social progress - Basic Human Needs, Foundations of Wellbeing, and Opportunity. The index uses an extensive framework comprising 89 indicators at the state level and 49 at the district level.

SPI Score. Puducherry has the highest SPI score of 65.99 in the country, attributable to its remarkable performance across components like Personal Freedom and Choice, Shelter, and Water and Sanitation.

Recommendations. At global level important parameters like UN Millennium indicators, Sustainable Development Goals are being monitored. It will be necessary to correlate parameters established for new concepts in India e.g., social progress as above with established global parameters. Niti Ayog could assist in this regard.

Empowered Indians. Social Empowerment means that all sections of society in India, have equal control over their lives, can take important decisions in their lives and have equal opportunities. Without empowering all sections of society equally, a nation can never have a good growth trajectory. A Viksit Bharat should have a resilient and strong economy that can provide opportunities and a high standard of living for all its citizens. The economy should be able to cope with the challenges of the 21st century based on entrepreneurship, innovation and competitiveness.

SOME AREAS FOR MONITORING SOCIAL PROGRESS

Integrated Redevelopment of Older Parts of Metropolitan Cities, Tier-1&2 Towns with Simultaneous Focus on Slum Redevelopment. Since independence, due to industrialisation/ urbanisation large scale development of cities & towns have taken place and now time has come for redevelopment of the older parts of these cities. Cases of collapse of houses with considerable loss of lives are increasing.

Urban Redevelopment has so far been attempted piece meal as under: Pradhan Mantri Awas Yojana Urban (PMAY-U) mission to address the housing requirement of urban poor including slum dwellers, Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformation (AMRUT), Swachh Bharat Mission – Urban (SBM-U) for provision of toilets/ vertical for slum development and "The Har Ghar Nal" mission addresses provision of drinking water supply.

The time has come for addressing urban redevelopment in an integrated, holistic approach by announcing integrated urban redevelopment schemes (with slums in special focus), with financial participation by the State Govts. Substantial redevelopment of one major city per state should be targeted by 2029, with shifting industries/polluting entities to new satellite towns with good connectivity to disperse the city population to an extent. In habitat planning for redeveloped areas, need for minimal commuting should be kept in mind. Approval should also be given to few tier1 towns for preplanning, notification for land acquisition etc.

Mission mode Approach to Road Safety & Reduction of Fatalities. National Mission on all Safety Parameters. At least one out of every 10 people killed on roads across the world is from India, according to the World Health Organization (WHO). During the year 2021, a total number of 4,12,432 road accidents were reported in the country, with 1,53,972 fatalities and 3,84,448 cases of injuries. The worst affected age group in Road accidents is 18-45 years, which accounts for about 67 percent of total accidental deaths.

Despite the initiatives taken by Ministry of Road Transport and Highways (MoRTH) for review of vehicular, road engineering design & practices and for educational measures for raising awareness in the field of Road Safety, the problem continues. The Ministry has been implementing the Motor Vehicle (Amendment) Act 2019. The Ministry has also been working on identifying Black Spots on National Highways and on short term and long-term rectification of these black spots. Moreover, the Ministry is also working to collect accidents data through Integrated Road Accidents (iRAD)/e-Detailed Accidents Report (e-DAR) projects to provide a real-time causative analysis of road accidents in line with the international practices.

Of the fatalities reported, 35.8% were on National Highways, 24.6% on State highways and balance 39.6% on other roads. UP was the state with highest fatalities. Over speeding was the major contributory cause followed by wrong side driving.

It is recommended that the subject should be progressed on Mission mode by launching a country wide monitoring programme. A National Mission may be launched on Safety parameters in all sectors and inspections tightened up, considering the national loss to life and properties. There is a case for introducing percentage Neutral Inspections.

It is also recommended that the Apex external safety inspection organisations overseeing technical ministries should be transferred under MOS in PMO for independent functioning.

TRADE PERSPECTIVES : MAXIMISING EXPORTS : VISION 2047

The trend of increasing adverse trade deficit with China needs to be reversed and dependency on China for critical inputs (Key Pharma Starting Materials, Solar cells, Lithium Batteries) progressively reduced. The PLI initiatives for critical inputs should be augmented as necessary. Govt has done well to encourage domestic exploration for scarce minerals and to support overseas

investments in this regard. PLI initiatives are required in labour-intensive small-scale sectors like kitchenware, Glassware, small appliances, tools, Electrical fittings, Plastic items to revive local industry, against flooding of imports by China. This will also help strengthening the MSME base in India.

Recent declining trends in export of labour-intensive items, Engineering Goods, Apparels, footwear, pearls, gems etc, despite depreciation of rupee versus the dollar by 6% in FY 2023 will need deeper examination, notwithstanding that smaller competing countries like Bangladesh and Vietnam enjoy import duty benefits in sectors like textiles.

Building internal strengths in Exports through Quality, Cost leadership, Innovation in products, Quick customer Response, long term customer relationships/ trust, embedding sustainability, deep understanding of markets through developing market intelligence are vital for exports. Govt on its part could help through reforms in customs, refund procedures etc. Govt/PSUs, as large material procuring organisations, may consider prescribing global quality & environmental standards in a percentage of its procurement to enable Industry to rise to global export standards. It will be advisable to develop Global standards and Quality parameters for all export products and services in domestic/operation.

Operationalise E-commerce Export Hubs. There is need to Operationalise E-commerce Export Hubs to realise the potential of the sector particularly in encouraging the small-scale sectors. Encourage Rupee denominated export -import facilitating liquidation of Rupee balance (The local currency trading could reduce trade transaction costs by 2-3%. Government fixed rates in the long past have resulted in manipulation). Zero Rating of Exports should not be subjected to Budget constraints.

Plug and Play Facilities. Developing Plug and Play facilities in advance will help kick starting production with FDI and domestic companies. Greater fiscal support/ incentive to long gestation R&D should be considered. 33 out of 38 Organisation for Economic Cooperation & Development (OECD) countries provided preferential tax benefits for R&D in 2022. Level playing to be provided for domestic industry facing competition from major imports through Free Trade Agreement (FTA) route. Focus on Fintech, animation, gaming, e-commerce and Artificial Intelligence (AI) to increase value addition and global competitiveness. There is need to strengthen Indian Shipping to acquire 25% share of India's international trade.

Present increasing export trend in High-Technology products (Mobile phones etc) signals the importance for India to increase contribution of manufacturing sector to GDP from present level of 17% to above 25%. China with its manufacture at 30% of its GDP has achieved a great success in exports. India needs to develop as a Global Knowledge Hub with greater focus on R&D and skill development. India also needs to Develop Global Manufacturing Hubs in areas where it has potential – Steel (with associated heavy machinery and plant building, Electronics, Biotech/Pharma, Textiles, Chemicals and

Petrochemicals along with Electric Vehicle (EV) development in Auto sector.

Services Sector. In the services area, in IT besides new emerging technologies like AI etc focus should be on creation of IT products with greater value addition. A special PLI model may be considered to encourage creation of low-cost high-tech medical services which can promote medical tourism. With opening up for foreign universities and creating some centres of excellence for foreign languages, India can aspire to become International Hub for higher education. Govt is taking steps to promote tourism where issues like safety and security of tourist is an important issue to be covered.

Free Trade Agreements. In the past decades India had not gained from the FTAs, with partner countries gaining more by exporting to India than India's exports to those countries. It is however understood that the progress of recently concluded FTAs with Australia & UAE have been encouraging. In the just finalised FTA with European Free Trade Association India has focussed more on the long-term investments by the partner countries. India needs to setup a strong analytical wing to analyse support and subsidies given by developed countries (USA/EU) to export sectors to bring counter arguments when issues are raised in WTO on Protectionism and support to exports in India, non-trade barriers etc. EU is imposing a cross border adjustment mechanism for non-green products.

Foreign Trade Policy 2023. Export (Services & Merchandise) target has been kept at 2 trillion dollars by 2030 from present level of US$ 760 Billion.

The policy is based on these 4 pillars:

1. Incentive to Remission,
2. Export promotion through collaboration - Exporters, States, Districts, Indian Missions,
3. Ease of doing business, reduction in transaction cost and e-initiatives and
4. Emerging Areas – E-Commerce Developing Districts as Export Hubs and streamlining Special Chemicals, Organisms, Materials, Equipment and Technologies (SCOMET) policy. There will be boost to the exports of handlooms, handicrafts, and carpets.

World's highest railway bridge over Chenab river

HIGHER MANAGEMENT TRAINING CAMP

सूर्या फाउण्डेशन के चेयरमैन श्री जयप्रकाश जी का मानना है कि उनके जीवन में किताबों और प्रशिक्षण का बहुत महत्त्व है। विवेकानन्द के शक्तिदायी विचार से लेकर 'ली आई कोका' तक अनेक अवसरों पर किताबों ने उनका मार्गदर्शन किया है। सूर्या परिवार में प्रशिक्षण का यह क्रम अनवरत चलता है। उनका मानना है कि प्रशिक्षण से व्यक्ति को नई दिशा, नई प्रेरणा और नई ऊर्जा मिलती है, साथ ही व्यक्ति के व्यवहार और स्किल का भी उत्थान होता है। इन्हीं विचारों के साथ सूर्या फाउण्डेशन विभिन्न समयों पर मैनेजमेंट ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन करती है।

इस वर्ष सूर्या रोशनी लिमिटेड कंपनी के लगभग 110 वरिष्ठ अधिकारियों ने हायर मैनेजमेंट ट्रेनिंग कैम्प में भाग लिया।

शिविर प्रकृति के मनोहारी स्वरूप को समेटे बालाजी निरोगधाम, दिल्ली में आयोजित हुआ।

दैनिक दिनचर्या में 'योग और प्राणायाम के महत्व' और 'योग कैसे करें' विषयों पर योगाचार्य विनोद शर्मा और विनोद मित्तल जी ने सत्र लिये।

सत्रों के माध्यम से शिविरार्थयों ने प्रेरणादायी बातें और मैनजमेंट के गुर भी सीखे। प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. जितेंद्र अढ़िया, डॉ. गोविंदा, ज्ञान वत्सल मुनि, समीर लिमये और ब्रिगेडियर डी.सी. पन्त जी ने शिविर में अपना मार्गदर्शन दिया।

किसी भी प्रकार के कार्यकर्ता के लिए स्वास्थ्य इस समय में सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। शिविर के दौरान स्वास्थ्य हेतु प्राकृतिक

चिकित्सा की विभिन्न क्रियाओं का लाभ भी शिविरार्थयों को मिला।

अध्यात्म के क्षेत्र में अति प्रसिद्ध इस्कॉन के सन्त श्री केशव प्रभु ने शिविरार्थयों को ना सिर्फ अध्यात्म का महत्व बताया बल्कि भक्ति रस की गंगा में खूब गौते लगवाये।

शिविर करने आये कंपनी के अधिकारियों ने पूरे मनोयोग से सभी गतिविधियों में भाग लिया।

शिविर का उद्घाटन सूर्या फाउण्डेशन के वाईस चेयरमैन श्रीमान वेद जी ने किया ।

समापन कार्यक्रम में सूर्या रोशनी लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनय सूर्या जी और सूर्या फाउण्डेशन के वाईस चेयरमैन श्री मुकेश त्रिपाठी जी ने संबोधित किया।

शिविर के पश्चात नव ऊर्जा से ओतप्रोत होकर सभी अपने गंतव्यों को लौट गये।

स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन

प्रसिद्ध विचारक गिजुभाई के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को स्वावलंबी, निर्भय, सृजनशील या हुनरमंद और अभिव्यक्तिशील बनाए। उन्होंने बालकों के समुचित विकास के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार दिए -

1. बालकों के वैयक्तिक विकास को महत्व दिया जाए।
2. बालकों में सृजनात्मक क्षमता के विकास को महत्व दिया जाए।
3. प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण का आधार व्याख्यान के स्थान पर वार्तालाप होना चाहिए।
4. बालकों को खेल पद्धति द्वारा पढ़ाते हुए, गाना गाते हुए, वाद्य यंत्र बजाकर नृत्य कराते हुए, कहानी लिखवाकर, नाटक करके, बागवानी द्वारा, प्रकृति के निरीक्षण द्वारा, स्वतंत्र भ्रमण कराते हुए ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
5. शिक्षण पद्धति स्वभाविकता पर आधारित हो न कि कृत्रिमता पर।
6. अनुशासन के लिए स्वक्रिया एवं स्वप्रेरणा जाग्रत करना आवश्यक है न कि दंड और भय से अनुशासन लाना चाहिए।
7. शिक्षक की भूमिका एक मित्र, सहायक और पथप्रदर्शक की होनी चाहिए।

गिजुभाई के इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर सूर्या फाउण्डेशन ने एक कक्षा - एक पुस्तक की अवधारणा के साथ पुस्तकों की रचना का काम आरम्भ किया – आज शिक्षा के अनेक आयामों पर शानदार काम चल रहा है।

लगभग ढाई वर्ष पूर्व सन् 2022 से SBO (स्कूल भारती आर्गेनाइजेशन) द्वारा प्रतिमाह के अंतिम शनिवार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2024, बच्चों के बस्ते का बोझ एवं मानसिक तनाव कम करने, शिक्षा के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास, शिक्षा में आध्यात्मिकता का महत्व, शिक्षा में समग्रता, एकरूपता, आनंददायकता और रोचकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सेमिनारों काआयोजन किया जा रहा है। इन आयोजनों में देश के एक बड़े प्रबुद्ध वर्ग का प्रतिभाग हो रहा है।

प्रो. शरद सिन्हा

(Head, Dept. of Teacher Education, NIE, NCERT)

27 अप्रैल 2024 : सेमिनार की मुख्य वक्ता प्रो. शरद सिन्हा ने प्रतिभागियो को संबोधित करते हुए कहा कि टेक्नालॉजी का सही उपयोग लाभदायक है किन्तु आजकल बच्चे इन्डिस्क्रिमिनेट्ली मोबाइल, टेब्लेटेट आदि का उपयोग करते हैं जिससे उनमें एकाग्रता की समयावधि (अटेंशन स्पैन में कमी आती है। आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस के कारण शिक्षकों को और अधिक अपडेट रहना चाहिए। लर्निंग आउटकम्स और लर्निंग आब्जेक्टिव्स का अन्तर स्पष्ट करते हुए उन्होंने बच्चों में इक्कीसवीं शताब्दी के अनुरूप कम्पीटेंसीज विकसित करने के लिए शिक्षकों को तैयार होने का आह्वान किया और अन्त में उन्होंने जोर देकर कहा कि लर्निंग आउटकम्स को ध्यान रखकर शिक्षण होने पर बच्चों में कम्पीटेंसी निश्चित रूप से आएगी।

डॉ. देवकीनन्दन शर्मा

(Prof. NCERT & State Coordinator, संस्कृत भारती)

विशिष्ट वक्ता डॉ. देवकीनन्दन शर्मा ने एनसीईआरटी के द्वारा मातृभाषा में शिक्षण और भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षण में समाहित करने पर जोर देते हुए कहा कि गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक-अध्ययन, वाणिज्य आदि सभी विषय महत्वपूर्ण हैं। इनमें से ऐसा कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसमें भारतीयों का विशेष योगदान न रहा हो। हमें शिक्षण में उनके योगदान को मेंशन करते हुए बच्चों में भारतीय होने का स्वाभिमान जगाना चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में इस्कॉन से आए हरिनाम सेवक प्रभुजी ने कहा कि आजकल के अधिकांश बच्चों के व्यवहार और ज्ञान से उनके माता पिता सन्तुष्ट नहीं हैं। इसका कारण बच्चों में आध्यात्मिक ज्ञान का अभाव है। इसी कारण से उनमें शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान के भाव में कमी आई है। इससे बच्चों के व्यवहार में अपेक्षित परिष्कार नहीं हो रहा है। उनके सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें आध्यात्मिक बनाना जरूरी है।

प्रो. धनंजय जोशी

(कुलपति दिल्ली टीचर्स यूनिवर्सिटी)

18 मई 2024 : प्रो. धनंजय जोशी ने कहा कि शिक्षकों के व्यवहार में संवेदनशीलता जरूरी है। संवेदनशील शिक्षकों के बिना समाज का रूपान्तरण संभव नहीं है। पद्मश्री जयप्रकाश जी के राष्ट्र निर्माण के प्रयासों की सराहना करते हुए श्री जोशी जी ने कहा कि जयप्रकाश जी युवकों के चरित्र निर्माण कर स्वामी विवेकानन्द के सपनों को साकार कर रहे हैं। अन्त में उन्होंने इमोशनल क्वोशेन्ट के साथ सिम्पैथी क्वोशेन्ट पर जोर देते हुए कहा कि इससे मानव प्रबुद्ध होने के साथ -साथ मानवीय गुणों से युक्त होगा जिससे समाज रूपान्तरित होगा।

अक्षर धाम मंदिर से आए **डॉ मदन मोहन पाण्डेय जी** (मैनेजिंग डायरेक्टर, स्वामी नारायण संस्थान, अक्षर धाम मंदिर, नई दिल्ली) ने कहा कि निरन्तरता और धैर्य से कार्य करने पर सफलता निश्चित होती है जिसे सूर्या फाउण्डेशन ने करके दिखाया है। शिक्षा के क्षेत्र में किया गया उनका प्रयास स्मरणीय रहेगा। उससे आगामी पीढ़ियाँ लाभान्वित होंगी।

विशिष्ट वक्ता **आचार्य परमेश शर्मा** (सहायक प्राध्यापक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विवि) ने शिक्षा को सदाचार से जोड़ने का आग्रह करते हुए कहा कि सफल शिक्षण वही है जो शब्दों के साथ-साथ आचरण से सिखाया जाय, तभी शिक्षा सार्थक होती है।

डॉ. सीमा शर्मा

एडीशनल डॉयरेक्टर,
एजुकेशन, एमसीडी, दिल्ली

29 जून 2024 : सेमिनार की विशिष्ट वक्ता डॉ. सीमा शर्मा ने कहा कि शिक्षा की ताकत तोप, तलवार और बम से अधिक है। विश्वयुद्ध में जापान पूरी तरह नष्ट होने पर भी आज दुनिया में टेक्नॉलाजी में उच्च स्थान पर है क्योंकि शिक्षा के द्वारा उसने बारूद से हुए नुकसान के बाद भी सर्वाइव किया और अपनी अर्थव्यवस्था को उच्च स्थान तक पहुंचाया।

- NEP-2020 में बच्चों के ड्रॉप आउट रेट को कम करने का सुझाव दिया गया है क्योंकि देश के जितने लोग शिक्षित होंगे देश उतनी ही प्रगति करेगा।
- NEP-2020 में सबको शिक्षा के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर जोर दिया गया है जिससे भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाया जा सके।
- शिक्षा में 10+2 के स्थान पर 5+4+3+3 पैटर्न को स्वीकृत किया गया है।
- NEP-2O20 के विजन को साकार करने के लिए 5th, 8th और 12th कक्षा के बाद Drop out rate को कम करना आवश्यक है।
- 12th के बाद के Drop out rate को अधिकतम 50% पर Maintain करना जरूरी है।
- बच्चों की रुचि के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ना है।
- 6 से 8 वर्ष तक बच्चों के मस्तिष्क का लगभग 85% विकास हो जाता है। इस दौरान सीखा गया ज्ञान जीवन भर आसानी से स्मरण रखा जा सकता है। अतः इस आयु वर्ग के सभी बालकों की उचित देखभाल और गुणवत्ता युक्त शिक्षा की व्यवस्था जरूरी है।
- फाउण्डेशनल स्टेज (3 वर्ष से 8 वर्ष - नर्सरी से कक्षा-2) में बच्चों जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग करना अच्छी तरह सिखा देना चाहिए।
- ECCE का करीकुलम तैयार हो चुका है।
- Promotion Policy - बच्चों को उत्तीर्ण करके Next class में भेजने संबंधी नीति पर पुनर्विचार होना है।
- अब तीसरी, पाँचवी और आठवीं कक्षाओं की परीक्षा राज्य स्तर पर आयोजित होगी।
- 11वीं, 12वीं के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को कक्षा 9वीं से प्रारंभ किया जाएगा।

प्रो. ब्रह्मप्रकाश जी भारद्वाज

(Head, Dept. of Educational Research and Innovative Programmes)

अपने उद्बोधन में कहा कि -

- भारतीय संस्कार युक्त वातावरण के कारण विद्या भारती के स्कूलों से मुझे ऊर्जा मिलती है।
- सभी श्रोताओं को मेरा सुझाव है कि NEP-2020 को पूरा पढ़ें।
- Teacher is the soul of learning process.
- हजारों लोगों के Discussion और प्रश्नोत्तर के बाद NEP-2020 बनी है।
- 5वीं तक मातृभाषा में शिक्षण अनिवार्य।
- जो नीति बच्चों को विकसित करे वही श्रेष्ठ है।
- कोठारी ने Education for Development का सिद्धान्त तत्कालीन स्थिति के अनुसार दिया था।
- NEP-2020 Education for Values and Disposition की बात करती है।
- इस नीति के अनुसार हमें बच्चों को ऐसी उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा देनी है जिससे भारत एक न्यायसंगत समतामूलक जीवंत ज्ञान समाज में रूपान्तरित हो और वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बने।

जगदबन्धु जयदेव दास जी,

(Renowned Preacher, Striver and Devotee of Krisha), ISCON Temple, Punjabi Bagh

जगदबन्धु जयदेव दास जी अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव की दो घटनाओं का उल्लेख किया जिनके आधार पर यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिकता से शिक्षा में पूर्णता आती है। अध्यात्मज्ञान रहित शैक्षिक ज्ञान कभी भी आनंददायक और टिकाऊ नहीं हो सकता है। उच्च प्रतिभा सम्पन्न और अपने बौद्धिक ज्ञान से विश्व को चमत्कृत कर देने वाले विवेकानन्द, अरविन्द घोष, महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे महापुरुष एवं जगदीश चन्द्र बोस और आइन्सटाइन जैसे वैज्ञानिक भी आध्यात्मिक ज्ञान सम्पन्न थे। अतः शिक्षा में आध्यात्मिकता होना जरूरी है। आध्यात्मिकता से ही निश्चिन्तता, धैर्य और एकाग्रता जैसे गुण विकसित होते हैं। इन गुणों के बिना शिक्षा के शिखर पर पहुंचना असंभव है।

डॉ मुदिता अग्रवाल

(डीन, महर्षि आइ टी यूनिवर्सिटी, महर्षि नगर नोएडा)

20 जुलाई 2024

- Transcendental Meditation is a simple, natural and effortless technique, equally enjoyable and easy to learn & practice.
- It can be done sitting comfortably with closed eyes for 20 minutes twice daily.
- It does not require any change in lifestyle.

- It can be learnt easily with any TM teacher.
- It positively affects our mind, body, intellect and behaviour.
- It promotes creativity, practical intelligence and logical decision making.
- It facilitates integration of brain functioning.
- It increases EEG-Brain-waves coherence
- It decreases anxiety and strengthens our immune system.
- It decreases alcohol use.
- People doing TM show younger biological age.
- According to the American Association of Doctors TM is the only meditation that reduces heart rate.

श्री विजय कुमार उप्पल

(Retd. Area Manager UBI, Transcendental Meditation Teacher and Preacher of Maharshi's Vedic ideology)

- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास करते हुए अपने पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक कर्तव्य पूरा करे।
- केवल रोटी, कपड़ा और मकान प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है बल्कि व्यक्ति का पंचकोशीय विकास करते हुए उसे सुयोग्य चरित्र संपन्न नागरिक बनाना है।
- अन्नमय कोश के विकास से तात्पर्य उचित आहार विहार से शारीरिक अंगों का समुचित विकास है।
- प्राणमय कोश के विकास से तात्पर्य Lifeforce या Proper and controled movement of muscles से है जो नियमित योगासन, व्यायाम, खेल कूद, प्राणायाम आदि से सम्भव है।
- मनोमय कोश के विकास का मतलब भावनाओं और इच्छाओं को नियंत्रित करना है । अपने अन्दर मन की गहराइयों में प्रवेश करना - धारणा और ध्यान की स्थिति प्राप्त करना मनोमय कोश के विकास के बिना सम्भव नहीं है।
- विज्ञानमय कोश के विकास का मतलब इच्छा-शक्ति को बढ़ाना और नियंत्रित करना हैं।
- आनन्दमय कोश आत्मिक आनन्द से सम्बन्धित है। अचानक प्रिय व्यक्ति/वस्तु से मिलन, इच्छित उपभोग प्राप्ति और ध्यान और गहरी निद्रा की स्थिति में प्राप्त आनन्द इस कोश की अभिव्यक्ति है। इसका समुचित विकास सत्संग, भक्ति पूर्वक श्रवण, मनन, संकीर्तन, कर्मयोग के आचरण, राजयोग एवं ज्ञानयोग के अभ्यास से होता है।
- हम कितनी भी उन्नति कर लें पर Desires (इच्छाओं) और Emotions (भावनाओं) के कन्ट्रोल के बिना सुखी नहीं हो सकते।
- ध्यान से विचार शुद्धि और भावनाओं तथा इच्छाओं पर नियन्त्रण की क्षमता विकसित होती है।
- आनन्दमय कोश के विकास से प्रसन्नता आती है जो हमारे अन्दर से आती है जबकि अधिकांश लोग आनन्द को बाहर की वस्तुओं में खोजते हैं। कहा भी गया है - **ज्ञानं चेतनायां निहितम्**। आत्मा सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है। सब प्रकार के ज्ञान और आनन्द का स्रोत हमारी चेतना में निहित है या हमारी शुद्ध चेतना ही ज्ञान और आनन्द स्वरूप है।

प्रो. संगीता चौहान

(Dean, Dept. of Teacher Educaion Guru Gobind Singh Indraprartha University, Delhi)

- शिक्षकों का रोल ट्रान्सफार्मेटिव है। केवल किताबी ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि छात्रों के जीवन में सार्थक रूपान्तरण करना शिक्षकों का मुख्य दायित्व है।
- शिक्षा वही है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व को रूपान्तरित करे उन्हें और शुभ, सुन्दर और सशक्त बनाए।
- शिक्षा के द्वारा शिक्षार्थियों को भारतीयता की जड़ों से जोड़ना आवश्यक है। उनमें भारतीय होने का स्वाभिमान विकसित करना जो न केवल उनके विचारों में बल्कि उनके कार्य-व्यवहार और आचरण में भी परिलक्षित हो। साथ ही उनमें ऐसे ज्ञान, कौशल, मूल्य और प्रवृत्तियों को विकसित करना जिससे वे मानवाधिकारों, सतत् विकास और जीवन यापन तथा विश्व कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हों और सच्चे अर्थों में भारत के श्रेष्ठ नागरिक होने के साथ-साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से युक्त आदर्श वैश्विक नागरिक भी बनें।
- भारत को स्थायी रूप से एक समतामूलक, जीवन्त, ज्ञान समाज में रुपान्तरित करना तथा इसे वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 का मुख्य विजन है।
- इसके लिए हमें 5 पिलर्स ऑफ एजुकेशन- Access, Equity, Quality, Affordability & Accountability को Apply करने की जरूरत है।
- अधीति, बोध, आचरण (अभ्यास + प्रयोग) और प्रचार-प्रसार रूप पंचपदी शिक्षा प्रणाली विकसित करते हुए शिक्षकों को केवल Facilitator का काम करना चाहिए।
- अन्त में उन्होंने सूर्या फाउण्डेशन से Disabled/ Differently abled दिव्याँग बच्चों के लिए कुछ करने जैसे ब्रेल लिपि में पुस्तकें तैयार करना आदि की अपील करते हुए अपने वक्तव्य को पूरा किया।

Contitution Club of India में Scholars के Conferences

कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इण्डिया में उपर्युक्त शिक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालने के साथ-साथ SBO द्वारा तैयार की गई समेकित-एकीकृत-आनंदायक-रोचक पाठ्य विषय वस्तु प्रस्तुत करने वाली 'सूर्य भारती' पुस्तकों की समीक्षा हेतु देश की विविध सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं के प्रमुख शिक्षाविदों की कान्फरेन्सेज का आयोजन गत दो वर्षों से किया जा रहा है।

प्रतिभागियों के अनुभव कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। सन् 1986 में जारी हुई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह एक बड़ा परिवर्तन है। NEP-2020 में कक्षा 5 तक स्थानीय भाषा या मातृभाषा में शिक्षण पर जोर दिया गया है। साथ ही इस नीति में पाठ्यक्रम के कंटेंट, पुस्तकों की संख्या और उनके मूल्य को कम करते हुए बच्चों बस्ते का बोझ कम से कम करने का सुझाव है जो सूर्या फाउण्डेशन की शिक्षाविंग SBO द्वारा 'एक कक्षा एक किताब' परियोजना के तहत सूर्य भारती पुस्तकों के रूप में हमारे सामने आया है। इसके क्रियान्वयन से बच्चों को पुस्तकों का भारी भरकम बोझ नहीं उठाना पड़ेगा, उनका दिमाग शान्त रहेगा और विभिन्न शिक्षणेतर गतिविधियों में अधिक सक्रियता से भाग लेंगे जिससे उनका सर्वांगीण विकास होगा। सूर्य भारती पुस्तकों के चित्र और छोटी-छोटी कहानियाँ बड़ी ही रोचक और मनमोहक हैं। इनके द्वारा बच्चों में पढ़ने की रुचि विकसित होगी।

वंदना, M.A., B.Ed., MSW

सामान्यतः सार्वजनिक विद्यालय हो या सरकारी, संस्कृत विषय छठी कक्षा से पढ़ाया जाता है। लेकिन सूर्या फाउण्डेशन की सूर्य भारती पुस्तकों में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित आदि सभी विषय प्रारंभ से ही पढ़ने को मिलेंगे जिससे बच्चों का रुझान संस्कृत भाषा पढ़ने की ओर बढ़ेगा। पुस्तक में सामाजिक ज्ञान एवं पर्यावरण का भी समावेश है। इससे बच्चा पढ़ाई के साथ-साथ नैतिक भी बनेगा जिसकी ओर आजकल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मैं सूर्या फाउण्डेशन के प्रति आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने नन्हें कन्धों के बढ़ते बोझ को कम करने का सफल प्रयास किया है। मैं पिछले 10 सालों से बच्चों को पढ़ा रही हूँ। मैंने अनुभव किया है कि अधिकतर किताबों में मुगल शासकों के बारे में जानकारियाँ अधिक होती हैं जबकि हिन्दू राजाओं के बारे में बहुत कम। सूर्या फाउण्डेशन ने अपनी सूर्य भारती पुस्तकों में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया है। मुझे ये पुस्तकें बहुत पसन्द आईं। एक बार पुनः सूर्या फाउण्डेशन का धन्यवाद।

मीनाक्षी गुप्ता, शिक्षा प्रमुख, सेवा भारती, उत्तम नगर

पीएम श्री सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल, खेरंचा

गतिविधियाँ (01 जून से 31 अगस्त 2024 तक)

शैक्षणिक

- कुल संख्या : 455 छात्र
- शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में 13 जून 2024 से शैक्षणिक कार्य शुरू हुआ।
- कक्षा 6वीं में नव-प्रवेशित कैडेटों के लिए प्रवेश-उत्सव 17 जून 2024 को आयोजित किया गया।
- 25 से 29 जुलाई 2024 तक क्लास 9 से 12 तक का गवर्नमेंट यूनिट टेस्ट संपन्न हुआ।
- 01 से 08 अगस्त 2024 तक क्लास 6 से 8 तक का गवर्नमेंट यूनिट टेस्ट संपन्न हुआ।

Orientation and PDC.

- 18 से 27 जून 2024 तक क्लास 6 का orientation और क्लास 7 & 8 का PDC सम्पन्न हुआ।
- Orientation और PDC का दीक्षांत समारोह दिनांक 18 जून 2024 को आदरणीय श्री वेदजी, वाईस-चेयरमैन, सूर्या फाउण्डेशन और श्री सत्येंद्र शर्मा, चेयरमैन, स्कूल मैनेजमेंट कमेटी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

Teacher Training

- 01 से 03 जून 2024 तक 'कन्या शिक्षा परिसर-सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित' सीहोर, मध्य प्रदेश में Teachers Training संपन्न हुई जिसमें हमारे स्कूल के सभी शिक्षकों ने भाग लिया।

Co-curricular Activities

- 29 जून 2024 को 63 कैडेट्स ने NCC-CATC Camp, Grow More College, Himmatnagar में भाग लिया।
- House-wise Oath Taking Ceremony, 08 जुलाई 2024 को सम्पन्न हुई।
- 14 अगस्त 2024 को 09 कैडेट्स और 01 शिक्षक ने 'Youth Festival 2024-25', शामलाजी में भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

खेल

- जिला स्तर के स्कूल गेम्स के सारे एथलेटिक्स इवेंट्स में हमारे कैडेटों ने प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- जिला स्तर के स्कूल गेम्स के Archery, Basketball, Kho-kho और Football event में हमारे कैडेटों ने प्रथम प्राप्त हांसिल किया।

स्वास्थ्य

- 19 जून 2024 को हमारे स्कूल में 'World Sickle Cell Day' मनाया गया जिसमें हमारे क्षेत्र के विधायक श्री पी.सी. बरंडा, प्रोजेक्ट एडमिनिस्ट्रेटर, श्री दीपेश केडिया, IAS; अरावली जिले के हेल्थ कमिटी के अध्यक्ष, श्री रवि भाई पटेल; जिले के हेल्थ ऑफीसर, एम.एम सिद्दीकी और डॉक्टर आशीष खान, महामारी कंट्रोल मेडिकल ऑफिसर शामिल हुए।
- 21 जून 2024 को हमने अपने स्कूल में 'International Yoga Day' मनाया।

गणमान्य व्यक्तियों का आगमन

- 09 अगस्त 2024 को 'International Tribal Day' के कार्यक्रम में श्री जयंती भाई गामेती और श्री जयंती भाई भगोरा, दोनों ट्राईबल समाज के सोशल वर्कर के नाते हमारे स्कूल में पधारे और बच्चों को प्रेरक भाषण दिया।

प्रवास

- 06 जुलाई 2024 को शैक्षणिक प्रवास के अंतर्गत क्लास 6 के 79 कैडेट्स और 08 अध्यापक, साइंस सिटी अहमदाबाद, नरेंद्र मोदी स्टेडियम अहमदाबाद और अक्षरधाम मंदिर गांधीनगर देखने गए।

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर (मध्य प्रदेश)

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर, सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित विद्यालय में छात्राओं के क्षितिज को व्यापक बनाने तथा बाहरी दुनिया से परिचित कराने के उद्देश्य से कक्षा 11वीं की बालिकायों का दिनांक 14 से 28 मार्च 2024 तक दिल्ली भ्रमण तथा व्यक्तिव विकास शिविर आयोजित किया गया । दिल्ली भ्रमण के दौरान छात्राओं को राष्ट्रपति भवन संग्रहालय, प्रधानमंत्री संग्रहालय, इंडिया गेट, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, अक्षरधाम मंदिर, वायु सेना संग्रहालय, बिड़ला मंदिर, औद्योगिक इकाइयाँ जैसे सूर्या पाइप प्लांट, सोमानी टाइल्स और पारले-जी फैक्ट्री इत्यादी दिखाई गयी। प्रतिवर्ष की भांति सूर्या फाउण्डेशन द्वारा छात्राओं के लिए 10 दिनों का व्यक्तित्व विकास शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने योग, ध्यान, घुड़सवारी, निशानेबाजी, पी.टी., ड्रिल, कराटे, प्राकृतिक चिकित्सा, नृत्य, शैक्षिक सत्र तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यदि में बढ़-चढ़कर भाग लिया । शिविर के उपरांत बालिकाओं के आत्मविश्वास में कई गुना बढ़ोत्तरी देखी गयी है।

व्यक्तित्व विकास शिविर (पी.डी.सी.)

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर, सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित विद्यालय में कक्षा 7वीं और 8वीं की छात्राओं हेतु 18 से 27 जून 2024 तक 10 दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया। शिविर में छात्राओं ने योग, ध्यान, संगीत, नृत्य, कला और शिल्प, संचार कौशल, मानचित्र का अध्ययन, पंचतंत्र की कहानियाँ, अच्छे स्वास्थ्य के टिप्स, विज्ञान के प्रयोग आदि जैसे विषयों / गतिविधियों से ज्ञान अर्जित किया ।

कक्षा बारहवीं की बोर्ड परीक्षा के उपरांत दिनांक 2 से 5 अप्रैल 2024, छात्राओं को अयोध्या जी, छपिया तथा नंदीग्राम का भ्रमण कराया गया। यह शैक्षणिक भ्रमण धार्मिक महत्व वाले ऐतिहासिक स्थल के सांस्कृतिक महत्व को समझने के लिए रहा। छात्राओं ने अयोध्या जी में रामलला मंदिर, कार्यशाला, हनुमान गढ़ी, कनक भवन, दशरथ भवन, सरयू नदी जी की आरती, लेजर शो, इत्यादि के दर्शन किये। छात्राओं ने स्वामीनारायण भगवान के जन्मस्थान छपिया, नंदी ग्राम-भरत मिलाप मंदिर इत्यादि के दर्शन भी किये।

विद्यालय द्वारा कक्षा 7वीं की छात्राओं को दिनांक 30 जुलाई 2024 को भोपाल का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया, जिसमें भोपाल में विधान सभा, बिरला मंदिर, बड़े तालाब में बोटिंग और यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर स्थल भीमबेटका शामिल रहा।

In Kanya Shiksha Parisar, Sehore run by Surya Foundation Special CBP (capacity building program) is carried out by renowned educationalist and National Award winner Shri Baba Nandan Pawarji who was the founder of special experimental school (Anandshala) at Nagpur. He holds many prizes and awards in the field of education. All teachers of KSP Sehore and PM Shri Surya Eklavya Sainik School were part of this training program, the training empowered teachers with NEP features along with aims and objectives of a teacher. It was tailored specifically for overall development of a personality as a teacher. It came out as a fruitful training program.

'The International Yoga Day-2024'

was observed in the school campus on 21st of June – 2024. A special trainer Ms. Vinita Yadav guided the whole yoga drive, the teachers as well as the staff attended the very drive, enthusiastically.

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर
सूर्या फाउंडेशन द्वारा संचालित

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar New Delhi-110063

Phone: 011-2525 3681 | Email: info@suryafoundation.org | www.suryafoundation.org

suryafoundation1 surya_foundation suryafnd suryafoundation surya_fnd